

### ञानम-विवार

#### --- 0 60 ----

কাঞ্চন নগ্রপতি নূপ সভাধৃতি। ফুশীল ক্ষার শান্ত স্থমাত স্থরীতি 🗓 🖯 বন্ধি বান্ধি জলগি জিনিয়ে সুগঠীর। লচণ্ড প্রতাপ:ভারে**যেমন মিছির** 🏾 অত্ল ঐশ্বর্যা তার কে করে গণেন। প্ৰবোৰ সন্বজ্ঞ বিজ্ঞ বড়ই স্থাসন। প্রজাগণ প্রথা মন নূপের ক্লপায়। প্রতিপুর্য করি জ্ঞান পালেন দ্বায়। প্রকাদয়ালু রাজা কম্পত্র প্রায়। भावभा व्यथन करन गर्यमा भगता। ্ছফ জনে সঙ্কুচিত ভূপের শাসমে। 🖰 শিক্ত জনে মিন্টালাপে তোবেন যতনে। ্পজার পীড়ার শাস্তি হৈতু রৈদ্য কড়। বিদ্যালয় স্থাগিত আছুয়ে কত শতা

#### नम-विलाम।

তুঃখ করিতে খোচন।

**. ল্** সদাত্রতের স্থাপন। शमाधिक कि कुर्त श्रम्म। ,হার প্রভাবে শার্ণকায় বৈরীগণ 🛊 নগরের শোভা যত কে করে বর্ণন। না দেখি না শুনি যেন ইন্দের ভবন ॥ इान् शान लाउ कर कुक्षम छेतान । . कुरल भूरल मधुकरत मधु करत भान ह ष्ट्रे आया नगांख्य ज्यनत्याहिनी। হাত ভাব কটাকেতে কামের কামিনী 🛊 প্রথম প্রেয়দী পক্ষে পুদ্র হর জন। সর্বে গুণাহিত অভি স্কদুশা 13ন। পরে শুন কনিষ্ঠা পক্ষের বিধ্রণ। रा गर्ड कांगल शूक्त मर्ख स्लेस १ है ল্যেষ্ঠা হতে শ্ৰেষ্ঠা সেই অতি ৰূপৰতী। ৰূপে ভার কাছে রতি হবে এক রঙি । ভূপতির প্রাণাধিক প্রিয়তমা সতী। সস্তান বিহীনে মাত্র মনে থেদ অভি। সর্বাক্ষণ রহে রামা ঈশ্বর সাধনে। পুত্রের কামনা করে অভি শুদ্ধ মনে 🕼

এই ৰূপে নিত্য নিতা করিতে সাধন ! হইল তাহার পরে গর্ত্তের লক্ষণ। अनि नृश्मिषि स्थी स्टेटनन छात्र। দাসীগণে সাজ্ঞা দিল শতত সেবায় ৷ ভবে ক্ৰমে ক্ৰমে গৰ্ৱ সম্পূৰ্ণ হইল : চ ভবর্ত্তী লক্ষণের পুত্র প্রসবিষ । কি আশ্চৰ্যা সে নৌন্দৰ্যা অতি অপৰূপ: (भवर्ग (मिश्रा श्वर्ग इक्ट्रेल विकाश ॥ সংক্ষাহ্র ৰূপ হেরি চাঁদি পড়ি কাঁদে ! ্ৰত গি<mark>তিয় রজ্জ্ব দিলে দিবাকরে বাঁ</mark>ধে চ इक यदा शुष्प छिनि इस शनटन। ক্ষমপ্রের দল জিনি অতি প্রকোমল। भारत क्रितिस क्रिया कार्य मध्य प्रभवकार । দুত প্রির ভূপতিরে দিল সমাচার।

### जिशमी।

স্পুত্র জন্মিল শুনি, আননিক নৃপমণি, অস্তঃপুরে গিয়ে নির্থিল। পাত্র মিক্র সভাজন, শুনি এই থিবরণ, সকলেতে পুলকে পুরিল।

#### वानक-विनाम।

निशायत कामार्थरत, सुपतिक विकरत. वादाका भृतित्य पिन धन। আপামর সাধারণে, তুরিলেন বছ ধনে, সংখ্যা তার কে করে গণন ! অমাত্যাদি ছিল হড, অনুচয় শত শত, ব্যক্তি বুকি সবায় ভূমিল। নৃত্য গীত বাদাভাও, অঞ্চত অভুত কাও, মহোৎসৰ হইতে লাগিল 🛚 পরে গ্রহ বিজগণে, ডাকি নৃপ স্থাদনে, करहर यटलक विवत्र।। জবিল আমার গ্রভ, পকরূপ লক্ষণ যুত, বণি তাহা কর নিরপণ। কোন গ্ৰন্থ কোন স্থানে, ভবিষ্ট্ৰ বৰ্ত্তমানে, कणाकन कनाइरव किरव। কেবা হিটি দৃটি কার, নির্ণর করিছৈ ভার, জন্ম পত্রী প্রকাশ করিবে। আৰকা পেৰে ৰুধগণ, নিজ নিজ নিকেতন গিয়ে বদে পঞ্জিক। লইয়ে। গণনায় হরে ময়, ছিরু করি ক্ষা লয়, ফলাফল দেখেন ভাবিয়ে ।

### আনন্দ-বিলাস।

গ্রহ্ উপপ্রাহ্ চয়, শুভকারী সমুদয়, কেহ নয় তার বিপরীত। मरहास रहेरा उर्दर, हाब भजी निश्चि मर्दर ন্পের নিকটে উপনীত। अरक् अरक **रू**थगन, जन्म পত्री विदत्तन. नगराम याका स्टब्सिका। माम रुप मिता यन, खूल स्का म ७ भेन, প্রকাশিয়ে কহিতে লাগিল। কোন গ্রহ রুট নয়, তুট দেখি সমুদয়, खन जान्न कुमार वृत्र खन : भोरा वीया श्रवाजी, जगाश नाधरन कम. मका भारख इहरेव निश्रुत ॥ मञ्ज बीट्रिश्च हरत्र ताजा. भारतन गतांत भूका, ইবে কিছু নাহিক সংশয়। हरें। स्टब्स नाम, स्तरमन खन्याम, बिक्छ कानित्व सहा**ल**श । প্রানি পুলকিত চিতে, সভোবের বারিধিতে, ভাষিতে ভাষিতে সম্ভবে वेष यम कानि जूर्न, बरनावयं कवि शूर्न, विभाग कतिया तुथन्तरम ।

ভদন্তর নৃপ্পুত্র, পেলেন বৃধির স্থা, জিলি সিভপক্ষ শশ্ধর। পফে পকে মান গত, সময় সমূরি কত, গত হইল চতুর্থ বংসর ৷ পঞ্চ বৰ হল যবে, দিব্যা শিক্ষা হেতু তবে, **भिक्राक क**ित्र निर्देश कर । তাহাতে নরেক্ত স্কুত, সর্বস্তিণে গুণযুত, শ্রুত মাত্র করে অধ্যয়ন। ব্যাকরণ আদি যত, শিখে শাস্ত্র নামা মতে, স্থানবুদ্ধি শ্রুতিধর অতি। ধনুর্ফেদ রাজনীতি, 🆣ব্য-অঙ্গন্ধার স্মৃতি, উপাখ্যান পাঠে হ্ৰ মতি॥ নৃপস্থত এই মতে, পঞ্চদশ ব্যু গতে, नर्का भारत रहेन পৃত্তিত 🚓 विट्युष्ट मृत्रवाह, वार्यार्थ नाहि साहै বিজ বলে এইও উচিত 🖟

## কুমারগণের নানা মত ক্রীড়া ও নৃপ-তির অপুত্র সহ মৃগয়া।

তবে রাজপুত্রগণ মন অভিলাধে। রহে বন্ধুবর্গ দহ হাস্য পরিহাসে। কখন বেড়ান অশ্ব গ্রুল আরেছিণ। मनीट खरमन कच्च एत्रशै दाइरन ॥ বিশেষ সাহসী বড় সূরসেন রায়। স্বাকারে লয়ে কভু কাননে বেড়ায়। স্থীকার করিয়ে তথা মূগ অগণন। প্রত্যাগত হন পুনঃ আপন ভবন।। এই ৰূপ নিত্য নিতা নানা ক্ৰীড়া করে। व्यान्त्रभू वाक्षांत्र अक खन छात भटत । अक्रिक कुर्वाक कड़िला है की मरन ऋशुंक नहिंछ यात मुश्झा कान्नद्रण ॥ এত ভাবি পুজগণে ডাকি নররায়। अकटनन मार्थनात प्रम अधिकाश । প্ৰনি ভূমী পুঞ্জগণ ভাতে সাম দিয়ে। मिल मार्टिंग मद्दे वाहित माणिए।।।

#### वामम-। रहाता

• उदर देमनाधाटक डाकि ज्ला जाका मिना। मटेमरमा माखिए। मरव श्रेष्ठ हहेवा ॥ নিছ দাল করি রাজা পাত্র নিত্র সনে। वाहित हहेरत हत्व कानने अमर्।।। माठक जुतक रेमना जनश्या मरकर्छ। मलीन हज्ः दश्च मत्य हलिल इस्कृटल ॥ ু রাজধানী ছাড়াইয়ে প্রবেশি কানন। নানা স্থানে নানা শোভা হেরে অগণন।। নানা জাতি বৃক্ষ তায় ফল ফুল ধরে। কত মত পক্ষী বুসি তাহে রব করে॥ কত চক্রবাক ভাকে বুসি তর্গরে। यन यन्त्र, वाह्न वटर विक विक करत ॥ পুষ্পের সৌরতে বন সব আম্বেদিত। मधु भान करत चाल रहत इति ।। ত্রসব দেখিয়ে সবে পুলুক্তিত মনে। रुषा २८७ तिन अक पूर्वम कानदम ॥ त्म थार्म भन्नरक नत दहिरत याजना तह शक् शकी दाय दक् करत श्रेशना ।। कात भरत किन् पूर्व गमन कतिया।

হৈরিল অপূর্ব এক মুগ সেই বনে। नृशास्त्रीय त्वरंत्र जात्र यक्ष टेमग्रागरण ॥ প্রমানে প্ডিরে তবে কুরঞ্ তখন ! **ভূপের সন্ম**ুখ দিয়ে করে পলায়ন।। प्रिथिश अभिने जूभ श्रीनित्तन गर ! मा जिनित स्मर्रे जेख ग्रह्मत करूत ॥ তবে শতি বাঞা মতি হয়ে নররায়। कुरुक्त भारह भारह जुरू घुरेश ॥ অখোপরি ছিল নৃপ পুত্র সপ্ত জন। टेमना नक हाफ़ि मदव कतिन शयन। তার পরে বছ দূর যাইতে যাইতে। क्षित्र (तन मृत्यु ना भान प्रिथिए ॥ मित्राशीन त्रमा यारा दक कदत्र थछन। वन समि अरमे रण बद्धत निमन । দেখি হেন অপটন বলে একি দায়। হায় হায় বুঝি কার্বিপাকে প্রাণ বায়। कामबनी, मृश देगादत किनन नक्टरे। कुत्रमें जाजिन था। बात रानि घटक ब्याई माठ विश्वासिक एडेरस व्यक्ति। विश्वेस सर्वे प्रविद्यान सिम्म सन्।।

পথ শ্ৰমৈ সনঃ ওমে দিগুওম হইয়ে। উঠিলেন রাজ। এক গিরি পরে গিয়ে। অভি মে সুরম্য স্থান শোভা চমৎকার। সে শোভার তুলা শোভা নাহি দেখি আর । হরিষে ভূমিতে তথা নুপ নৃপস্থত। হেরিল যতেক শোভা অঞ্চত অন্ত । কৃত মত কলবান বৃক্ষ অগণন। कात्र माधा दकवा भारत कतिए वर्गम ॥ আকরোট কিশ্মিশ বেদান। অঙ্গুর। নিচু পিচ নেও আত্র কাঁঠাল খজ র। নারিকেল বেল তাল্ব, জাম আনারস। নানা মত ফল কত ধরে নানা রস 🏖 कान द्वारन शूर्याणातन शूचि नाना जानि अज्जी लागांश होता रवा गुबी काछि कारिनी राजनीनात्वा नेद्रक आद्यानिक। গ্ৰহাৰ টগৰ দোপাৰি শেত পীত ম তথায় विश्दत शयही ना एवं भगमा। रित्रामन कतिशामि क्लिक्न मध्या । मरनाकृत एकबंद यमि जंबशद्र ।

তার মধ্যে ছিল আর এক শুক্রর। श्रक्ति विकित् किन रमिश्ट मुन्द । किया जात हमें काह एक त गठेन। स्वर्ग स्वर्ग म्म चि स्रामाजन । গলা বেড়া বেন কত সুদীপ্ত প্রস্তরে। জিনি প্রভাকর প্রভা প্রভা কলেবরে॥ 'হেরি নৃপপুতাগণ সান্দ হইয়ে। ्रम्थात्वन क्र्श्वित क्षञ्जूनि ट्लिया । माहिত नवात वाशि नित्रिश विद्या **७८क** स्टित दश वाट्ड क्रुड़ारेन अक्र ॥ বলৈ কভু নাহি দেখি হেন অপৰপ। তুবনা কি দিব ভার নাহিক স্বৰূপ।। সীয় প্রিক্ত প্রকাশ করেতে বুবি বিধি। निष्करन निर्माण प्रदेश निर्मिण के निषि।। **धहे नश जगनश (हे**तिएस डाकन) भारती तुर्व मान खटक प्रतिदृष्ठ छथन ॥ রাশার বুরিয়ে ভার শুক প্রকীরর। के ब्रिटी राजन केले ब्रह्म के करा है। ्रमद्भार व्यवदेश स्वतं विद्यान शुक्रात

পরে ভূপ চতুष्णांच नितीक्त करत। ना एएत शकीता देशन का उन करता। गंत्रता वााशिष्ठ (यन पूज्य मर्ग्नान। তেমতি হইল ভূপ বিহন্ধ বিহনে॥ क्षा क्या मृत्य भाग भाग खान। তত্ত্ব করি ভূমে রায় হইয়ে অজ্ঞান।। ्र जाणाचत अक्तत स्ट्रेट्स मन्त्र । देनववानी नम वानी इक रांठ कम ॥ ধরিবে আমারে ভূপ কি তব শক্তি। অনারাসে শুন্যে পারি করিবারে গতি। (कन मम अगाअन ना दुनिएत तारा। वाल्टकत मल हार धतिहरू आमात्र॥ मिथ भको जाजि वृद्धि अवध्य जामात। जामि धता ना मिटक धारू जाया काते ॥ তথাপি ভোসারে ধরা দিতে ধরাপতি দ मारह नार मदन किन्द्र तो भावि नरश्चित्। भाष्टि गात्र कार्ट्स श्रा भगत रत्र छन। মা হেরিলে হবে তার ধরার পত্ন। नः श्री का बात जत्म किहा मा कतिएतं। क्ष क्यांस्टल दशित्म भाषाद्व भारेदन ॥ -

যদি মোর একথায় না হয় প্রত্যয় ! প্রতারার্থ কহি বাহা শুন মহাশয়।। পক্ষী কুপোত্তৰ আমি কিন্তু জাতীয়র ৷ জগতে নাহিক কিছু মন অংগাচর ।৷ ভূত বর্ত্তমান ভবিষাতে ধা হইলে। নিশ্চিত বলিতে পারি নিশ্চিত জানিরে ॥ এই মত বাক্য কত কহিমে রাজায়। আশ্রারে গ্রাম জন্য শূন্য পথে ধার।। হেরিয়ে পক্ষীর গতি ইতাশ হইয়ে। मदनोह्र १८४। भूदश् छ। द्वत वित्रा ভূপেরে ভাবিত দেখি ভূপতি নদন। জ্যেত করে সূত্রতের করে নিবেদন ॥ क्ति शिष्डः ब्हेश्राष्ट्र विद्वाग वन्त । কি অভাবে এই ভারে এত অন্য যন।। ছিতা প্রারহরি গুত্র ফলহ জরায়। रिक शहरा भकी आजि मिर जाशनाइ॥ ट्रांक बाही नृश्मिति छनि नमूनस्। बरन ग्रेंग भार रार्थ जान-गुकि नहा। जातिदन जीवनी मात्र जाव ना भारेत। শনপ্ৰ বুল কেন এডাছৰ বৃহিৰ।।

प्तरनं भिरत्र मञ्जनां कहित्सं मृद्धि जरन। लाठाहेद हात्म झारम येख मूखशद्य !! णाइ यनि नाहि इब्न कार्यात माधन। তথ্ন জানিবে মম নিভান্ত মরণ।। এত বৰি দীঘ্যাস ছাড়ি নরপতি। চলিলেন ধারে ধারে স্বপুদ্র সংহতি॥ किछ् १८४ देनना मदक इहेन मिलन। সবে মিলি নিজু রাজ্যে করিল গমন।। নিবানে আসিয়ে ভূপ ভাবিত অস্তরে। কি প্রকারে পক্ষিবরে গাইব সত্তর।। বভার বদিরে রায় সকলে ভাবিল। স্থানে স্থানে দূতগণে প্রেরণ করিল।। নৃপাজ্ঞাতে বত দুতে চতুদিকে ধায়। माना ज्ञादन सदम ज्वू त्रकाम मा भारा॥ ভূপ এ সমাদ শুনি অন্থির হুইয়ে। ভাবে वनि मिना मिना भारकत नाभिए। পিতার উদাস্য ভাষ হেরি পুক্রগণ ৷ श्रुक्त मा भारत श्रिकः करत निर्देशम् ॥ অনুমতি হয় যদি আমা স্বাঞ্চায় / पना जिलास्ट्र भारत मारेव प्राप्त ।

যেই দেশে পাৰ দেই পক্ষীর উদ্দেশ।
চিন্তামণি চিন্তা করি বাবে সেই দেশ।
এত শুনি নৃপমণি আননিত ক্ষতি।
পুত্রগণে হর্ষমনে দিল অনুমতি।
তদন্তরে দিন ভিত্র করিল রাজন।
ভিত্রপদ ভাবি দিজ করিল বর্ণন।

### শুকপকী অন্বেষণে কুমার-গণের যাতা।

ভূপতির অনুসতি লয়ে পুত্রগণ।
ডাকি যত ভূজানণে কহেন ভখন।।
শুক অন্বেষণে বাব নৃপের আজ্ঞায়।
পথের যতেক দ্ব্য আনহ ত্বায়।।
ভূমি আনন্দিত হরে দাসগণ যত।
আনিতে লাগিল দ্ব্য প্রয়োজন মত।।
অস্থাধাক জানিয়ে এতেক বিবরণ।
হস্মিত অস্থা সপ্ত আনিল তখন।।
পরে অক্রাধাক অক্র আনিল তখন।।
পরে ব্রের ভূমি দিব ক্ষ্মের হালায়।।

পথের সমল হেডু করি বহু যত্ন। .. वष्ट भूना इस योद नय तिई तद्भा। নিজ নিজ সুসাজ করিছে স্থ জনে। গ্রেণমিল গিয়ে পিত। মাভার চরগে।। তদন্তরে অস্বোপরে আরোহণ করি! গমন করিল ও চক্ষণে যাত্রা করি॥ ছাড়াইয়ে রাজধানী আর নিত দেশ। অপর রাজ্যেতে সবে করিল এবেশ।। नम मनी वृद्ध जीर्थ कंद्रिया जगन । পরে প্রবেশিল এক গছন কানন।। দেখিল তথায় সিংহ বাড়ো অগণন। ভয়কর রবে সবে করয়ে গর্জ্বন।। শুনি সব খোর রব ভীত হয়ে মনে। কোথায় আশ্রয় পাব ভাবে দাত জনে।। ट्न काटन शुर्णामान मिथिवाद शाह्। कनवान वह वृक्त बाहरत उथात।। स्ट्रें व वार्षात्र क्षेट्रे कतिता मनन । मत्नाञ्चरथ हत्य ताजश्रुळ मांड जन।। याहेरत लिखन अक एडक्यी मेंगानी नवन भूपिएव चार्ट देशकान्यन यनि ॥

क्यांत नकरण छर्त हर्स हर्तावछ ।

श्रीहरी निर्मा छथा इल छेपनीछ ॥

शाहरी निर्मा छर्त पथिक अधिक ।

भगान्दत निर्मा छर्त पथिक अधिक ॥

भगान्दत निर्मा छर्ति ।।

भगान्दत निर्मा छर्ति ।।

भगान्दि प्रत हर्स निर्मा दक्षिण गयाः ।

भावि प्रत हर्स निर्मा दक्षिण छ्याः ॥

रमिरिष्ठ पर्मिट्ट निर्मा इल खननान ।

छिठिल अज्ञा हिन्द निर्मा हल खननान ।

रम्म छेतेत्र पर्मा स्वा ज्ञानान ॥

रमम छेतेत्र पर्मा स्व स्व ज्ञाना ।

भागानीदत अभिरस क्रिल भ्रम ॥

नामा वाका ज्ञानाभरन मुख्य मरहान्दत ।

हर्स्न भरत अक ज्ञार क्रामन ज्ञित्र ॥

# কুমার সকলের কাননে ভয় প্রাপ্তি।

প্রশানতর সতি জন, এড়াইয়ে সে কানন, প্রবেশ করিল জনা বনে। ভাবি সেই প্রয়োজন, চিন্তা করে সর্বক্ষণ, বিষয় বিষাদ ভাবি মানে।

কোধা আছে ভোধা বাব, কোপায় সেধন পাৰ, रक्सरन या इंडेटर मिलन। ष्यमा हिन्दा नाहि बाब, पिटा मिना पानिदाई শ্ববাবে চিন্তে সংগ্ৰহন।। পরে টিভা পরিঘরি, টিস্তামণি চিস্তা করি, শীঘ্র গতি গমন করিল : তথা হেরি ঘোর বন ওয়ে ভীত সাত জন, সরুপার ভাবিত হইল।। উফ রুক্ত নানা জাতি, সমস্তার দিবা রাতি. रहरी बाँधा मां भाग मिरिटन। ভাষ্টে প্রকাশ সব, করে ভাক্ষর রব, শুনি ভারে না পারে ঢ়লিতে। সচিন্তিত হয়ে পরে. উঠে উচ্চ বৃফোপরে, (मर्थ स्या हता जलाहरत। দেখিতে দিখিতে নিশি, উপনীত হল আসি, ारिय क्छ स्थिमी चूला॥ मिक्रिज इरेट्स शहर, मुद्ध गाहि वाका महत्र, হেরে মতে সর্পের মূরতি। অতিশয় ভয়ত্বর, গজে বেন জলধর, নিখাবেতে প্রনের গভি।।

কীট পশু পক্ষী ভক্ষে, এসব দেখিয়ে চক্ষে, বঁলৈ রক্ষে কর নারায়ণ।

নিজ গুণে ক্লপা করি, তাণ কর সবে হরি, নাম তব পভিতপাবন !!

এইৰপে অ্র্রানিশি, গত হল বৃক্ষে বসি, অহি সব গেল নিজ স্থানে।

স্থরদেন করে তবে, মন বাক্য শুন সনে, স্থাবে নিজা যাও হয় জনে।।

চিন্তা লা করিছ মনে, আমি রব জাগরণে, ব্লেহর সে হইবে আমার।

এতেক শুনি বচন, মুক্তেতে করি শ্রন,

निया शिल इस अगागात ।

হেন মতে নির্ণি গেল, জানু আসি প্রকাশিল, রুক্ষ হতে নামে সাত জন।

মারোহিয়ে অখোপরি, চলে দবে বরা করি।

পূর্ণাত্ করিয়ে পে কানন ॥

হেন মতে কত বন, ছাড়ি রাজ পুত্রগণ,

हेनावर्ड (मर्ट्ग जेननीज ।

মরি কি দেশের শোভা, দেবতার মনোলোভা, গৃহ মার পায়াণে রচিত।।

द्वित्व जान्त्र्या चन, भटन इत्य इव यूट, प्तरथं गरव नगत अभिरय । मक्ति छेडम श्रंह, मानव नाहिक कह, कि इ ज़ित्र ना शाय जाविद्य ॥ অপৰণ দেখি ছেন, কহিতেছে সমুত জন, कि चान्ध्या विधित एकन। ना प्राचि ना छंनि काटन, कौव नाहि वामकारन, जादन मदन क जात कमन ॥ তবে সপ্ত নৃপসূত, দেখি দেশ এবভূত, সচকিতে চলিল নগরে। স্থুপের আগার যথা, উপনীত হয়ে তথা, व्यविभाग श्रुतीत विकास ॥ চারি দিকে যত হেরে, কে তাহাঁ বর্ণিতে পারে, মণি চুনি পরশ পাত্র। ্ধাদ্য দ্রব্য নানা মত, দেখিতেছে অপ্রমিত, किछ कोथा नाहि पार्थ नत ॥ शदत मख मर्ट्सम्दत, मरन मरन हिन्छ। करत, তার পর পরস্পর কর। जार्गा गृहा चाइह हर्रव, उन्छ जानिय मृद्व, पक एक दाराव जानव म

গুনি দ্বিল স্বতনে, করে রাজপুতা গণে, রবে সবে হয়ে নাবধান। জানিলে এস্থাচার, আসি ভুক্ট গুরাচার, নিশাচর চরে লবে প্রাণ।।

### স্কুর**সেনের রাক্ষ**দ বধ ও ভাতৃগণের বিচ্ছেদ।

এত বলি সবে মেলি মন্ত্রণ করিয়ে।
তদন্ত জানিতে রহে অন্তর হইরে।।
গোপনীর ছার এক দেখিতে পাইল।
রাজ পুত্রগণ সেই পথে প্রবেশিল।।
তথায় দেখিল এক রমা সরোবর।
মনোহর পুজে দেশন তাহার উপর।।
যুতি জাতি মলিকা নালতী মনোহর।
চম্পক কদন্ত বক কিংসুক ট্রার।।
বেল সেকালিকা জাদি গল্প মনোরম।
বেল সেকালিকা জাদি গল্প মনোরম।
বাল পীত জ্বা শোতে অতি অন্তপন্ন।
আনোহ অপরাজিতা চম্পক বকুল।
বাল ক্রেম্ব মনারমে।
বাল ক্রেম্ব মনারমেণ্ড আতি অনুপন্ন।

**एसमि निर्धामि (मंबिट्ड नुम्मत** काक्षन पक्षन प्राटन वृत्कत छेलत ॥ সাল তাল তমাল হিন্তলি গাম্ভারী। **षात जाम थेक**ृत भेनाने माति गांति ॥ इंडामि यदमक क्रक क करत र्वन। পক্ষিণ গান করে তাহে অনুক্রণ।। ं दिनिस्त स्ट्रेन सूथी मस्तावत छन। नाना वर्ष ज्ञारन ज्ञारन श्रक्त कमल ॥ ্ব্ৰুছ মুছ কুছ কুছ ডাকে পিকগণ। मनुः मन्तं शक्षतिह वट् अञ्चलः।। বার মাস বাস তথা করে রভিপতি ! কান্তা সঙ্গে মনোরঙ্গে হুখে করে রতি।। त्मरे উদ্যানের মধ্যে বাঁধি অশ্বগণ। পুরীর ভিতরে সূবে শরিল গমন।। ट्न कोरन मिबोकेत हरन अञ्चाहरन त्म त्रक्रमी (महे छाल दक्षिण मक्रमा। প্রভাতে উঠিরে সবে করিল যুক্তি। धरे द्वारन किছू मिन कत्रिव वर्गाछ।। निक कार्या वर्ष त्रांका कतिएत स्मर्ग कान शारन नाहि द्वित नगत धेयन ।

धक जन थाकि (हथा करह रक्ना ।" নগর অমিব মোবা ভাই ছয় জন।। তবে সভাকার মত একই হইন। क ब्रह्दिश्वित भग्नेनेत कि**का**निव ॥ পরে ছয় কুমারের কনিষ্ঠ বে अन्। वत्व अहिनाम पानि कतिए इसन ॥ श्रम पूर्ण रहेंचे इब बाजात मस्ता। धकारतानी नेशरत्य कतिन गमन।। त्रानापि कतिएस दस्या किन्छे र स्टन । **वर्ता वृत्य रहा एक एक करने शादनायन ग** রস্বন শুস্তত করি অতি কুতৃ্≢লে। रुष्ठ श्रम (४) छ कदियादि यात्र कटन ॥ সরোবর তীরে বেই করিল গমন ! **एन এक इम**्कात रेम्द्र घटेन ॥ विकरे जाकात अक ताकनी जाहेल। নিশানেতে ঝড় রুখি হইতে লাগিল ॥ জন খুনা ত্রদ জিনি উদর তাহার। नाजमा समात नाम मचक छेरात ॥ সরেশ্র ঘটি হইতে রাজার কুমার। দেবিল তাহার ৰূপ বিকট আকার 4

গোপনীয় স্থান এক আছিল ভথায় ! ভয়ে নৃপপুত্ৰ গিৱে প্ৰবেশিল তায় 🛚 দৃষ্টি করি চতুর্দিকে রাক্ষসী তথন। দেখে কড নানামত ত্রা আয়োজন। রাক্ষদী ভাবিছে মনে ইকি অসম্ব। थाना जया सिंदी किन ना सिथि भानव । এত ভাবি গৃহদার সব অন্থেধিল। कान दारन किंदुई नकान ना मिलिल। বলে আজি বিধি বুৰি বল ক্লপান্বিত। সেই হেতু খাদ্য দ্রব্য মেলে অপ্রমিত। এত বলি সমুদয় করিয়ে ভোজন ! করিলেক স্বস্থানে প্রস্থান সৈইকণ॥ তবে কিছু কণ পরে নিজ্ঞ নাইইডে। আইল নৃপের পুত্র পাবার পুরীতে। **मिथन त्राक्रमी चामा कुरतहरू जाहात।** সামান্য ৰূপেতে পাক করে পুনর্বার ॥ हेटलाम्रद्धा अन **ल्या हत मरहारत**ी আহার করিতে বসে হরিব অন্তর। না হয়েল তুপ্তি কারে করিতে ভোজনা ষ্থাহ্য করির সবে তাহার রক্ষম।

श्वि कुक्र इरस श्रीत ना कहिल कथा। कि हुई मा विवटनम ब्राक्तभी वाबछ। । পরে এরপেতে অন্যে করিল রক্ষন। পূর্ব্ব মত রাক্ষনী তা করিল ভোঙ্গন।। क्ट्रकारत त्राक्तभी दुखान ना नित्त । क्राय इव मदश्भात मकान भारेता॥ এই মতে ছয় দিন হইল তথায়। मक्षम क्रिटम तरह मुन्नतमन त्रास ।। স্মার সবে গেল পরে ভুমিতে নগরে। বিধির নির্পান্ধ কথা শুন তার পরে !! স্বানাদি করিয়ে পাক করে মনোমত। বছ বিধ রস ভার নাম ক্ব ক্ত ।। चमल्डद्र मर्तायस्त श्राकात् ननारः । হন্ত পদ খৌত হেডু করিল গমন। পুনর্কার পুরীমাজে আসি নৃগন্তত। विकास अञ्चन मध्या स्टाः स्थ् गुरु ॥ তদন্তর নিশাচরী আসি উত্তরিল। **एटा क्यादित वज् मक्ष**के **इंटेन** । ' बला जाजि स्था । इहेन जीमात्। मरनाष्ट्रस्थं नत गाश्म कतिव आशात ।

নিতা নিতা মোরে ভাত্তি থাক লুকাইয়ে। আজি মোরে বিধাতা দিলেন নিলাইয়ে 🛊 এত বলি জভ চলি যায় ধরিবারে। कूमारतः किছू राव ज्य भारि जात ॥ বলে আজি সপ্ত দিন আছি বাস করি। अक पिन प्रथि नाई अधन सुमानी 🎚 अहे जत्मा अ नशंदत्र नाहि खानी (लगः এছফী। হইতে নফ হয়েছে এদেশ। ভার সম্ভাতত শাস্তি দিব এই ক্ষণে। অচিরাত্ পাঠাইব শমন সদলে ৷ এত বলি মহাবলী সুসজ্জ হইল। নিশাচরী সঞ্জে বোর যুদ্ধ আর্ড্রিল। দত্তে লব্ছে মহাবীঃ ধরি বাছ বলে। সে নিশাচরীরে ধরি পাড়িল ভুতলে। তাर्ट्सिम म ताकभी कुमारत उथन। ধরি করে ভূমিপরে করিল পতন। कथन कुमात रूटि ताकनी कथन। ঘোর তর হর রণ কে করে বর্ণন।। क्ट्र करित नाहि शादत हुछ दन मात्रत । সাতকে মাতকে যেন পর্বত উপর।।

এই ৰূপ মহা যুদ্ধ রাক্ষী কুমারে। বিস্তারিত দে সকল কে বণিতে পারে।। পরে ধীর ধরি শির করে মুষ্ট্যাহাত। শব্দ করি নিশাচরী হইল নিপাত।। হেরিয়ে হরিষ অতি হইয়ে কুমান। মত্ত পদ ধৌত করি এল পুনর্বার <u>দ</u> কেতা চয় ভাতা শব্দ গুনিয়ে **ভা**বগে। त्म नगतौ भित्रहति **उत्त**्रा शिल दत्न । চলিল দক্ষিণ মুগে মুগপুত্র গণ। ভয় তালে নিশ্বান হতাল কৰে ঘন ! বলে সবে ছুরপুন্ট হেডু কন্ট কত। রাজ্য এই ধন নই অনিই সতত । একি দার প্রাণ যায় উপার কি করি। অকুল সাগরে ভাসি নাহি কুল তরি॥ এই মত রাজসুত গণ ভাবি পরে। **উপনীত হইলেন উদয় नগরে ॥** তথা দেখে পুরী শোভা অভি মনোরম। সুরাসুরে তিন পুরে নাছি তার সম। **छन्छदत्र भीदत्र भीदत्र श्रादरम् मर्गदत् ।** কে পারে বর্ণিতে যত অন্তত ভিতরে ।

ভার পরে জমিয়ে স্থানে স্থানে ভাহার। দেখিল অপূর্ব্ব এক পুরী চমৎকার। মনে ভাবে হবে এই রাজার ভবন। হারেতে দেখি যে ঘন্টা অতি স্থাশেতন ! এসব দেখিয়ে ভবে সকল কুমার ! ভারপালগণে কিজানিল নমাচার। শুনি দারিগণ কতে স্বিশেষ তার। লোম দত্ত নাম ভূপ এই পুরী তাঁর। ষ্কী। যেই আছে ভার শুন বিদর্গ। বাজ কন্যা সকলের বিবাহ কার্ণ।। সপ্ত সংহাদর। তারা শরদের শলী। বিৰূপ সে সৰ কণে মেনকা উৰ্বাসী।। ধরাতলে নাহি আর তাঁদের সমান। खित भौनाभिनी आग्र रुप्त प्रसूपान ॥ সকলে সমান ৰূপ সমান আকার। কিছু মাত ভেদ নাই অতি চমংকার।। বড় ছোট নির্ণয় করিবে ষেই জন। নে ছয় কুমারী তারে করিবে বরণ !। হারিলে করিবে কারাবন্ধ নৃপমণি। এতে যাঁর ইচ্ছা হয় কর ঘণ্টা ধনি।।

রাজপুত্রগণ শুনি এ্মন রুক্তান্ত : ক্নাগেণ প্রেম আশ হইল একান্ত ॥ त्महे बाद्य व्यामि क्ट्य इस मत्रामद्य । করিল ঘন্টার রব নবে পরস্পানে 🕏 यन्त्रो त्रव धानरण खनित्य नत्रवात । দুতেরে প্রেরণ কৈল আনিতে সবায়। দুতর্গে দ্রুত গতি ভুপতি আজ্ঞায় : উপনীত রাজপুত্র সকলে বথার 🖟 তদগুর ভূত্যগণ করি সম্পের। ৰবার সভার লয়ে করিল গোচর।। স্কবোধ নূপতি অতি রাখিয়ে সক্ষান। नमान्द्र नविकाद क्रिल भारतान ॥ পরিচর লয়ে পরে আহ্বাহিত মনে। বদাইল যত্ন করি রত্ন সিংহাসনে 🛊 थांगा करा जानि পরে বিবিধ প্রকার। রাজপুত্রগণে স্থে করান আহার। ভার পরে সভাকারে করে নররায়। मम পर निवतः स्त्रन मधूनातः॥ धकांक्रिंट क्ना! मम चार्ह मश्र कन। ছোট বড় চিনিলে পাইবে সেই জন।

না পারিলে কারাবন্ধ রাখিব ভাহারে। অনুমতি হয় যদি অ্বান সবাকারে :। এত শুনি কংই ছয় রাজার কুমার। ছোট বড় চিনিব বিচিত্র কিবা তার।। अकथा समिता ठूके इतः मृशयि। मानी প্রতি আজাদিল আদিতে নন্দিনী।। নানা অভরণ অঞ্জেকরে বালমল: हत्रा सुशूद **फिल न**श्राम कडान ॥ গৌর অন্দে নানা রক্তে করি দিল শোলা। (एशिट उमार्ती व्या खर्गमाना (बाजः । স্থবেশ করিছে কন্যাপণ স্থীন:ন।। পতা মাজে এল জিনি গজেন গমনে। দেখি ৰূপ অপৰূপ ভাতে ছয় জনে। চিত্তের পুত্তলী প্রায় দেখে কন্যাগণে 🛭 চিনিতে অশক্ত হল জানিয়ে ভূপতি : কারাবদ্ধ করিবারে দিল অনুমতি।। আজ্ঞা পেয়ে ভূতাগণ লয়ে দবাকারে यना यना वर्कामत्म व्रात्थं कार्राभादत ॥ হেন মতে রছে তথা রাজপুত্রগণৰ পরে কুমারের কিছু শুন বিবরণ।

রাঞ্চনীরে করি বধ হরিও অন্থরে। স্থান করিবারে পুন গেল সরোবরে র 'পুনর্কার পুরী মাজে আদি নৃপস্ত। থালা দ্বা ২৩ সব করিল এহতে ৷ मिदा व्यवमान इस भारत भरन भरन । কিংহতু এখন না আইল আতুগণে 🛚 ক্ষেত্র বহিছারে বাহির হইলে। করিল অনেক তত্ত্ব নগর ভাষিয়ে 🖟 क्रम कारण जिया बंख गामिनी बाहेल। मध्याकृत्या श्रमस्यात गृहरू अत्यानित । ভারাগণ বিচ্ছেদে কুমার ভাবে নমে। प्राह्म न। इल फुल दिल लग्नस्म । বছ্যত বিলাপিয়ে কররে রোদন ! বলে কেখা মোনে তাজি গেলে ভাত্ৰগণ দ ঈশার নির্বন্ধ কর্মা ব্রিয়ে তথ্য ৷ প্রবেধিল আপনি সে আপনার মন ! অনন্তর বিভাবরা প্রভাত হইল। ছুর্গ। জুর্গা স্মরি রায় উঠিয়ে বসিল।। প্রাতঃক্রত্য যে কিছু করিল সমাধান। তদন্তর চিন্তা করে এৰপ ৰিধান ।

ক্ষায় কাতর আছি করিয়ে আছার। যথা ইচ্ছা তথা ঘাব এই যুক্তি সার।। বিজ বলে ভাল যুক্তি রাজার নন্দন। চিত্ত স্থির কর কাষ্য হইবে সাধন।।

# কুমারের ৰূপবৃতী কন্যা দশনে আসক্তি।

তবে নৃপত্ত, অতি চিত্তায়ুত, তাংগ ক্ষান্থিত, অধোনদনে।

শেকে জরজন হইয়ে অধর, ভাবে নিনন্তর,

षाथन भटन ।

**বিষম আঘাত, করে করাথাত, গালে দিরে হাত**,

বসিয়ে ভাবে!

**टत्फ तट्ड खल, जन्नात जन्म, इट्डल क्षेत्रल**;

ভাতা অভাবে।

অমূলা রতন, ভাই ছর জন, কোথায় গমন, করিল হায়।

জানিয়াছি স্পান্ত, অদৃষ্ট অনিট, ডাই হেন, ক্ট,
ক্মিম দায় ঃ

এত তাবি বায়, না দেখি উপায়, চলিল ভুরায়, म मदन्तित्व ।

रेनरवत घरेन,'रुन विवयंग, ऋष्ट्रना द्रञ्न

प्तर्थ मञ्जूत ।

 क द्ववन्ती, जनक (माहिनी, कृतक नग्नी, ভটেতে বদি।

करत धनी श्राम, कि कव वार्थान, धम मीखियान, उनग अभी ।

ব্যাপি ত্রিভুবন, আছে যভ জন, সদৃশ তেমন,

কহি রমণী। কিবা সে স্থসভা, স্বতি নথা ভবা, নানা রস কাবা, জনে সে ধনী॥

গজেল গামিনী,ভাষা সুধাজিনি, পিক গুনি ধনি,

वनि शामद्या

উक्रत डेशमा, नाति पिटल मैं।मा, तञ्चा उक्र ममा, কে বলে ভারে 1

क्या (मह वाला, भाष्ट्र हिंगला , इहेल हिंगला, नग्रम (ह्यि।

তার ক্লি মাজে, কুচন্বর সাজে, অসুন্ধ বিরাজে গোপন করি ৷

ছেরি চন্দ্রানন, ভাষি যে তপন, অতি ছঃগী মন, গগনোগরে।

নেত যুগ মীন, হৈরিরে হরিণ, ভাবে নিশি দিন, বন ভিতরে॥

দেখি ওষ্ঠাধর, বিষ ছুংখান্তর, মইয়ে অস্তর. পলায় লালে।

জতি দঃথি মনে,নিন্দিয়ে আপনে,পশিল গোপনে অরণ্য মাজে।

কিবা দন্ত যুভা, হেরিয়ে মুকুতা, রত্নাকর যথা. তথা প্রবেশে ্

রত্ব পেল যবে, তাহার প্রভারে, রত্তাকর তবে, নাম প্রকাশেয়।

পদের বর্ণনা, কে করে বলনা, না পাই ভুলনা, তিন ভবনে।

দেখিলে সৈ পদ, যায় হে বিপদ, কামের সম্পদ.
দেখি সে খনে।।

নিষ্ণণকৈ তার, কণ্ঠে কণ্ঠ হার; অতি শোভাব্ধার, কুচ' উপরে।

ভার গাত্র গন্ধ, পাইয়ে আনন্দ, সদাকিরে ছন্দু, অবি চকোরে॥ দেখি সেই ৰূপ, কাম রমকুপ, সে নাগর ভূপ, নিৰূপ হল।

শাইদের শাশী, ভূতলেতে থসি, কিষা অংশ মিশি:-জনম নিল।

তনে রাজস্বত, হয়ে হ্রবিত, শোক হল শত.

कारमत वदन।

ক্ষুধা গেল দূরে, প্রেম স্থথা হেরে, চলে ধীরে ধীরে. রমণী পাশে।।

भक्ष পেষে बनी, मत्म खब्र গণি, পশিশ बाह्यि, क्षीत्रम मार्टकः।

জীবনে পশিয়ে, ধুখ ফিরাইয়ে, সেৰূপ হেরিখে. পঞ্জি লাজে।

निधित्य नावना, वटन धना धना, भृता कवि मृत्तः, आईन भनी।

किवा मूथे (भाज),महिकिवा खंडा ब्रेडि महमारणाडा, इरव (म मामुी।।

কামের কামান, করিয়ে সন্ধান, বধিবারে গ্রাণ, এজন এল।

ও শে**ল সন্ধানে,** না বাঁচি বা প্রাণে, মরি মনাগুনে, কি করি বল ॥ মদন কালায়, মরম গলায়, কিসে রাখা বায়, একুল মান।

যদি এরে পাই, তবে দে জুড়াই, নতুবা র্থাই, এছার প্রাণ।।

এৰপ দেখিয়ে, মনেতে ভাবিয়ে, ঈষদ্ হাসিয়ে. কৃহিছে ধনী।

কে তুমি হেতায়, কহ রদময়, নিফ পরিচয়, বল হে গুনি।

त्वयं कि मानव, ना हरवं मानव, मरनरङ मञ्जवः

হয় ভোমারে।

কিবা মায়া করি, এলে এই পূরী, বল সত্য করি ভূমি অংম রে।।

কিবা তব নাম, কোখা তব ধাম, ওহে গুণধাম. মিথ্যানাকবে।

আমি হে অবলা,তাহে কুলবালা,মোরে করি ছল। কি লাভ হবে।।

षिक रात खन, त्कम त्ना अमन, मिन का मनन, इहेरा खार ।

र्ष जन रायमन, भिनारत राज्यन, विधित्र घटना, भिनान जन ॥

### কুমার কপবতী উভয়ের পরিচয়।

নরেশ নদান শুনি এতেক বচন > মুদ্ধ হাসি মিট ভাষি কহিছে তথ্ন। धन ऋवमनि धनि किছू नाहि छग्न। 'দেবতা দানব নহি শুন পারিচয়।। জন্ত্রীপে বঞ্চরাজ্যে কাঞ্চন নগর ৷ শ্রেষ্ঠ তম অন্ত্রপুস খ্যাত চরাচর ৷৷ সত্যপুতি নামে বাজা তথায় বসতি। धन धाना পরিপূ∳ धर्मभील অভি।; खन जार्छ कर्न त्यार्छ यनुना नर्छन। তুই ভার্য্যা নূপতির সপ্তম নন্দন।। কনিষ্ঠা পক্ষেতে স্থত আমি রসবভি। **সুর্দেন বলি নাম** রাখিল ভূপতি। এক দিন মূণয়ায় গিয়ে পিতৃ সনে। আশ্চর্যা হেরিয়ে আসি ভাই সাত জনে। স্বারে পাঠান পিতা তার অস্বেষ্ণ। বহু স্থানে ভ্রমি পরে আসি এ ভবনে 🛚

ক্রমে ক্রমে নগরেতে করিয়ে ভ্রমণ। প্রাণী মাত্র কোন স্থানে না পাই দর্শন। দেখি: য অদু ু কাগু না বুৰিয়ে অন্ত। নপ্ত সহোদরে রহি জানিতে ভদস্ত। নিয়ম করিয়ে মোরা ফিরি ছয় জনে। এক জন থাকে মাত্র বন্ধন কারণে ॥ এইবপে ছয় দিন অতীত হইল। অবশেষে মোর পালা কালি কয়েছিল ৷ ভাষায় রাখিয়ে তাঁরা ছয় সংহাদরে। অশ্বাক্টে গেল সবে ভালিতে নগরে ॥ পরে আমি খানা দ্রবা ক্রি আরোজন। रहन काटन खन अक टेर्न्ट्रवंत गरेन I এল এক নিশাচরী বেলে অভিশয়। দীর্ঘাকার কলেবর দেখি ভর হয় ৷ মেঘের সদৃশ তার গভীর গর্জন। ' আইল আমারে পরে করিতে ভক্ষণ ॥ তার পরে মোর সনে হল ঘোর রণ! রণে পশি সে রাক্ষসী হইল পতন। তদন্তরে মোর সেই ভাই ছয় জন। কোন স্থানে গেল তার না জানি কারণ ॥

(महे हिडू विद्यार्थत इहेत्स मधन। प्राम १६७ जामि करन इड्रेश वियम !! পরেডে তোমারে হেরে গেল সেই দুখা रिट्या साकुल हिन्छ इस्त उर मूर्थ !! বর্ণনা অতীত তব ও বিধু বয়ান। কাননে কুরজী করে কটাকে প্রান। মৃদ্রে আমার আজি আনন্দ না ধরে। रानन मरनर्छ मांज मिलन महरह है कि नाम ४ इ.इ. जूमि दल छ्तकिनि । কোধান্ত বসক্রিতব কাহার নন্দিনি 🛭 कार्त्र अपरा गांति विष्ट्रपत श्वा। এসেছ এখানে তুনি করিয়ে আকুল। দেবকন্যা হবে ভূমি হেন লয় মনে। মোরে হেরি জীমনে পশিলে কি কারণে।। প্রাণী মাত্র নাহি হেতা শ্বাশান যেমন। নারী হয়ে এলে ভূমি করিয়ে কেমন 🛚 বিতারিয়ে সে সকল কছ স্থামুখি। শুনিলে তোনার বাক; হই তবে স্থী। ধনী বলে শুন ওহে রাজার কুমার। মম পরিচয় কথা কহিব বিস্তার।

(१४) हेनावर्ड मारम हिल्म ब्राह्म। धन थाना शूर्व माना विथा छ जुवन।। এক রাণী ছিল তাঁর নাম প্রভাবতী। অতি মতা গুণবতী পতিপ্রিয়া অতি।। তার গাড়ে জন্ম মম নাম ৰূপ্ৰতী। বিধির বিধিতে ছেন হুইল চুগতি। বেই নিশাচরী ভুমি করেছ সংচার। সেই চুটা হলে এই রাজ্য ছারখার ম এদৈশে বসতি করি ছিল যত জন। জীব মাত্র ছিল যত করেছে ভক্ষণ।। रमाद्र पश्चित्राद्ध हुन्छ। यथन जाईन। জীবনে পশিয়ে মম জীবন রহিল। प्रवीत क्रभाग्न भारे जीवत्न चालग्न। ভয়যুক্ত হয়ে তথা বঞ্চি রসময়। তোমার কারণে নিত্য পূজি ত্রিলোচনী। আজি তা সফল হল আইলে আপনি। নারীর জীবন বৃথা পর্তি নাহি যার। অনঙ্গেতে অঙ্গ ছারে করিয়ে প্রহার। এইতে। উদ্যান আর কোকিলের স্বরে। অলির ঝকারে যেন শর হানে **সরে।** 

অবলা পাইয়ে একা বসত্তের সেনা একত इहेटस वर्ष नाहि शुरन माना ह .कলেতে নিবায় অ্মি শাত্রের লিখন। অলে থেকে আয়ো জলে একি জন্তটন। वृद्धिन्। य व्यन्त भ कल्ला निर्वाष् ! **८८१मानम भिजन दिह**्न साहि गास । এত হলি নিকটোতে এল ৰপরাশি। নাগরের গলে দিতে পিরীতের ফাঁসে।। রামারে নেখিয়ে নূপ স্ত হর্ষিত। क्षांदर क्षाँकावा अध्य स्टेन वाधि । কুমার প্রনানদে কহে ক্রা। প্রতি। শুন শুন প্রাণপ্রিয়ে আমার মিনতি।। म्हन इटल्ट्ड स्मर कुःच मानानत्म। আজিতা শীতল কর তব প্রেম জলে। কি করি মনেতে সানা না সানে কিঞ্জিত। এর চেষ্টা কর প্রিয়ে যে হয় উচিত। তদন্তর বিধুমুখী বিভোর হইয়ে। বিশেষ বাাকুল হল মন্মথে মাভিয়ে। द्वित मात्रत मम छेलमुक वर्षे । विक करह दुक्र न स्वन व्यान घरहे।।

### ৰূপবতী কুমারে গান্ধর্ব বিবাহ।

ভবে নাগরের মন, কটাকে করি হরণ. লয়ে চলে বাজার ভবনে! করেতে ধরিয়ে কর, করি বহু সমাদর, বদায় রতন সিংহাসনে।। তদস্তর উদ্যানেতে, গ্রিয়ে অতি পুলকেতে, नाना शुक्रा करत आहत्। গাঁথিল অপূর্বে হার, তুলনা নাহিক ভার, मुक्त इस प्रशिद्ध मनन ! व्रिका वित्रद्ध कछ, माङ्गाईन मरनामछ, মনোরথ করিতে নির্বাহ। লজ্ঞা ভয় পরিহরি, নানা পরিহাস করি, कतिवादि भाक्स विवाह। उम्झत नृशमुख, मतन इत्त इच्यूछ, ভাবে কভক্ষণে হবে নিশি। विधि कि ममस इत्वः मिवाकत मृदत्र बाद्यः, मीउन क्त्रिट्व आति मनी॥

ভাবিতে চিস্তিতে পরে, দিবাকর গেল দূরে, নিশি অ:সি দিল দরশন ! ्रश्चाकत्र निज स्थान, कतिरलन नेशियमान, দেখি দোঁতে হর্ষিত মন ॥ यत्ना क्षर्य धनी भरत, शृष्ट्र,याना नरम करत, নাগরের গলে পরাইল। ভাচে হয়ে হ্রষিত, র্ষিক রুমে মোহিত, তাবি এক মাল্য করে নিল।। क्षिय़ शत्य मयांथल, यम्**त्व** यस्म मिल, শিহরিয়ে উঠে রাজবালা। ह्रिट्ड वसन हैं। म, सिट्ड दशन है। दम हैं। म, অন্তরে জ্বিল কাম জ্বাল।।। मञ्ज इल तमहाक, गांधिए जाशन काक, र्हेलन हक्ष्म बच्दा ! হ্রে অতি ব্যগ্র মতি, যাচ্ঞা করেন রতি, রপবতী কচ্ছে ক্ষমা কর !! আছেতো যামিনী নাথ, কেন হেন অকস্মাত্, অঙ্গ তব শরের সহায়। পরশে আমার প্রাণ, হয় এই অনুমান, मति वृक्षि मनन षालाश ॥

একে সন্তাপেতে মরি, নাহি নিবারিতে পারি, কত সব অবলা সরলা। ছিল্ল বলে নাহি বাদ, সাধ দোঁতে মনোয়াদ, নিবারণ হবে সব তালা।।

রতি ক্রিয়া। তবে নৃপস্কুত, সদনে পীড়িত, धविल काभिनी शतन इन्द्र वहेदा, उनन हृधिता, वनम इतिल ছाल १ कृष्ट गुन करत, धतिएक निरुद्ध, किष्टिक् करूपा वापी। मा कामि त्रमण, एट्ट आण धन, ক্ষহ নাগর মণি 🛚 উতলা इहेर्य, कलिका मलिए्य, रल कि इहरव वैधू। ফুটিলে সে কলি, ভবে আদি আলি, পিরে দে ফু:লর মধু।। কেমন সাহদে, এনব ব্যুসে, रानित्व कारमञ्ज्ञानत ।

ওচ্ছে রানরায়, ধরি তব পার, আলি মোরে কবা কর। শুনিয়ে নাগর, রুসের মাগর, কহিছে সূজ্বী প্রতিঃ भटर मा यांडमां, कि कति दलमां, প্রিয়ে দান কর বৃতি। डा**किरल रम ज्या, इंट्रेट्ट नि**र्चग्र, ভাব ছে ফেন প্রশায় । ত্যন্তি হৃদি বাস, পূর্ণ কর আশ, বাজি নাছি প্রাণে সয়। এতেক বলিয়ে, সহলে ছলিয়ে. কমলে পশিল অধি। मर्टल मर्टल, जुलि निल कारल, ध्रतिए क्यन कलि।। ভবে রসবতী, কাজে দিল মতি, गांदक क्षिट्स तकत्रा ফুটি প্রেমকলি, উঠিল উথলি, काम दन जारह जारम 🛊

## সুরসেনের শুকপকী অম্বেধণে গমনোদ্যোগ।

**এই ब्राप्त नाश्रंत नाश्रंती छूई छन**। निङ्ग नवंद्रास करत तुष्ट्रमी वर्धन । দোহাকার প্রেমরসে তুজনে মোহিত। নানা মত করে কেলি হয়ে হাট চিত। किष्ट्र पित शहर राज्य नहत्रमं नम्दन। বলে শুন প্রাণপ্রিয়ে আমার বচন।। তব প্রযো**জনে** কিছু না আসি বিদেশ। মম প্রয়োজন আরু আছুরে বিশেষ।। এক দিন পিতৃ সহ যাইয়ে কাননে। অপৰপ পক্ষী এক হৈরি ভাতৃগণে॥ गटनाइद अक्वत अपूर्व गठन। সুচিত্র বিচিত্র তার অঙ্গের শোভন। ধরিবারে ইচ্ছা তারে করিনে রাজন। বীরে ধীরে:যান পরে তাহার সদন। দেখি শুকু মনোছখ দিয়ে সেইক্ষণ। অস্বেধিলে পাবে ৰলি করিল গমন।।

श्वतित्य अञ्चन वाशी शकीत वनत्ता। চিন্তার চিন্তিত ভূপ ভাবি মনে মনে । ভাহাতে উদাস্পর্ড দেখিয়ে রাজনে! পর্যার উদ্দেশে আর্থি ভাই নাত জনে ।। পরে তারা সঙ্গী ছাড়া হয়ে কোথা গেল আমার ক্রটের মারি বিরহের শেল !! নে শোক হইল দূর তোমার মিলনে। जफरने स्म (थम श्रिटा विस्क विस्ता ।। থখন এলেছি আমি তাহার সন্ধানে। যথায় উচ্ছেশ পাৰ যাৰ সেই স্থানে॥ ইহাতে যদাপি হয় পতন শরীর। তবু না ভাবিব কফ এই যুক্তি ছির।। যদি কিছ জান প্রিয়ে তাছার সন্ধান। কহ দেখি বিধুমুখি মম বিদ্যমান।। এত শুনি শিহরিয়ে কর্ণে দিয়ে হাত। वर्तन अकि निमारू व वक्क आ निर्माश ॥ জানি সে পকীর কথা বড়ই তুষ্কর। নহেতে। তোমার সাধ্য প্রথ ভয়কর ।। -হিঙ্গলাটে শুভাঙ্গদ নামে নৃপমণি। যনোরমা কনা। ভার নাম স্থরঞ্জিনী॥

সৌদামিনী িনি তার ৰংপর হাথান ' শুনি ৰূপ সুরামুরে হয় হতজান। শুনেছি দুষ্কর তার বিনাহের পণ। वुक्रिएव अभिक धारत कवित्व वर्ते । শুনি যত নৃপস্কত হয়ে অভিলাষী। গিয়ে না পাইয়ে তারে হয়েছে সন্যাসী " তার কাছে আছে সেই শুক মনোহর ! . কেমনে পাইতে ভারে বল গুণাকর। যদি কোন মতে তথা দেখা পাও তার . না হইবে কার্য্য সিদ্ধি পরিশ্রম সার ।। हिन क्रांस्क क्रिन छथा यादि ७ हह आ। আমার ক্রদয়ে মারি বিচ্ছেদের বাণ ॥ শুনি নুপত্নত কয় যাব তথাকারে। ভাগো বাহা আছে ভাহা কে খণ্ডিতে পারে। তুমিতো অ্বলা বালা না জান কারণ্। নিবাশ্রে আশ্রয় স্বাপনি নারায়ণ।। অভএব প্রিয়ে মোরে কর হে বিদার। ছিক বলে শীভ্ৰ চল বিলয় না সয়॥

# মুরসেনের কাননে কালিকার সিদ্ধানত প্রাপ্তি।

**टन्युत मृश्यूच, खाति महन माना घट,** मार्थ कः मिनीत धंत करत। वर्षा अन धानिष्ठात्र, मरनराज अकृत क्राप्त-करा रचारत निमान महरते। স্থত যা সাধিরে পটে, আসির ভোমার পুরে, চিন্তা কিছু না করিছ মনে। जूमि यपि इं वाम, ना शृंतदव मनकाम, যদি মিলে সে ভোমার গুণে 🖁 এত শুনি রসবতী, হয়ে অভি ম্লান্যজি, नश्रत्म बहिर्छ वाति धाता। ' নলে শুন প্রাণকান্ত, যদি হে যাবে একান্ত, নিতাম হইব প্রাণে সারা !! কেমনে জীবন ধরি, তোমারে বিদায় করি, যদি স্থা ত্যজিয়ে যাইবে। मामीरत दिश प्रात्तन, ना कदिव निवादन,

তাহে তব অশুভ হইবে।

াতেক বিলাপ পরে, নিদায় করি নাগরে, ার্থনলে কভের জাবন। দৃপস্থাত ভদন্তরে, এবোধিয়ে প্রেয়দীবে, অশ্বারটে করিল প্রমন !! विश्वदाक्रम चार्म, अभ मामः (मरू स्ट्रां, অংশেধে প্রেশে কানন চেরে রুফ আগণন, ফল জুলে স্থান্ডন, বসি তথা ভাকে পিকগণ।। তৰে জ্ৰানে যুৰৱাল, নিৰিছ অৱণা মাজ, প্রবেশিয়ে পাণিল ভাষিতে। ভাতে পশার্থণ সায়, করে ভয়ান্তর রব, মহাভয়ে ন। পারে চলিতে।। ভাবিয়ে চিন্তিয়ে পরে: দৃটি করি কিছু দুরে: 'स्तरश अक जान्हरी वाशित । পুরি এক স্থনিগাত, চতুর্দিগে স্থগোভিত, বর্ণিয়ে কি শোভা কর ভার।। ভথা গিয়ে উন্ভত্তিরে, পুরি মধ্যে প্রবেশিয়ে, দেখে তিলোচনা শ্বাসনা। 🖊 पु ७मानी उग्रक्षती, व्यानशांत दिशस्त्री,

্ষনৰূপা গ্ৰাম্য বদনা li

ভক্তি ভাবে তদম্বরে, সোড় করি ছটি কবে, প্রণমিল দেবীর চরবে। হরিষেতে পূজা করে, স্তব আরহিল পরে মন আশা প্রবা করেছে।

#### मियात खत।

নমতে জগতমাতা কালি কদয়িনি! क्षेत्रक कबून भाग सूरम वंकित्। एक् व्यंत्रमधी ककि भि। भीमिकिन। धनारमः जाहारमः भित्या कालक्ष्यशिन ।। নমত্তে ভূদার হত্তি ত্রিগুণধারিণি। স্প্ৰিট শক্তি আলে ভ্ৰন বাংপিনি 🕽 😘 र्द्धी कर्जी मुक्ति पार्ज । कुलक् अनि। মদল বিধাতী জগদোতী নিস্তারিণি।। प्राप्ता भाषा महादिएमा डाउन्त जनि। জন্ন যুক্ত কর ভার। ঈশান গৃহি ।। তব তত্ত্বজ্ঞানি যনে ভব নিস্তায়িণি। নির্ভূণেরে কর রূপ। মহেশমোহিনি।। আমি মা হোমার দাস কিছু নাহি জানি। তপ ৰূপ তন্ত্ৰ মন্ত্ৰ তুমি গো ঈশানি।!

এৰূপে করিয়ে স্তৃতি লোটায় ধরণী। रम्भन् (मधि जुन्हे। खन्न क्रमनी 🗓 ভক্ত বৎসলা মাতা তাপিত তার্ণী। কিবা ভক্তাধীনা দেৱী ভক্ত পালিনী 🛭 ভব জায়া ভক্ত প্রতি হয়ে রুপারান। নৃগত্তে সিদ্ধ দক্ত করিলেন দান।। বলিলেন এই মন্ত্র করিয়ে পঠন ৰথা ইচ্ছা যাবে কেছ না পাবে দৰ্শন 🛭 আর তব বাঞ্জিত যা আছে প্রয়োজন। মম বরে সিদ্ধাত্য হইবে মনন !! এমত শুনিয়ে ভৃষ্ট নরেশ নক্তর। এক মনে প্রণমিল দেবীর চরণ।। স্টি স্থিতি প্রলয়কারিণী তুমি শিবে। নিজ গুণে দীন দিজে,বাঞা পূরাইবে !!

# কুমারের হিঙ্গলাট নগরে উপনীত।

নৃপস্থত তদন্তর, তথা হতে শীখ্র তর, বহিতুতি হইয়ে তথন।

মহানদে যায় চলি, হয়ে অভি কুভূহলী नाना ऋान कतिरश अभग ॥ 'হেন মতে দে জানন, ছাড়ি নুগতি নক্তন, **इ**जुलाश्व (मस्थ (नहातिहाः কত দুরে দৃট হয়, তপন কিরণ প্রায়, मिश्रि ए। यु ए निम भा हेर्स । रम्ट पाउँ करते नाना, महन महन विस्कृताः जेन्द्र अवन एवं १८४। কিষা হেন মনে লয়, হবে কোন দেবালয়. বুঝা যায় স্মোতির প্রভাবে ॥ निक्छेड् इत्त शत, स्टब जशूद मर्शत, বিচিত্র নিন্মিত রাজ ধাম। হেরি বিমোহিত চিতে, প্রবেশিয়ে স্বরাহ্নিতে, হেরে শোভা অভি অনুপান।। প্রাচীরেতে চারি ভিত. সে নগর প্রবেটিত, চারি দার তাহাতে শোভন। श्रुष्ट्यामान जुरुनेन, जातन जातन स्ट्राजन **(मश्चि इय मन छेडा हेन** वा মল্লিকা মালভী জাতি, দেখিতে সুক্তর অভি.

চম্পক গোলাগ শোভা পায়।

#### वानम-विलाम।

তমাল হিন্তাল তাল, আয় ভাম সুরসাল, ত হে বসি পাফী গাম গায়।। কৈছু দূরে মরেবের, দেখে স্বভি মনোহন, কাঞ্চলে সোপান হল ভার। নানা জালি পু পাও য়, দেখে যাতি শোভা গায়. कुतन( महिन्द २३ राज । क्रमम ज्यान्हर्य ८६८वः महाम म नरस शहर, ভাৰ মধে। কার্যর জবেশ। मृष्णि मगत मानः ज्ञानिदारव अपवामः প্রজাগতে ক্রিস্ক্রিস বিশেষ । ন্দ্ৰনি প্ৰেছাগৰ ক্ষা, শুন ওচে মহাশ্যু, কহি শুন দ্যি তেৰিং ন। . विकला है : एम जार , र जाज़न गर्माथ, প্রভারেপতে শ্যান স্মান ॥ সতে এক জন্যা হার, কপ তাতি চমংকার, বৃদ্ধি এক বৃতি তার কাছে। সে কন্যা স্বৰূপ আর, ৰূপ কি আছয়ে কার, ত্রিলগত মধ্যে যত আছে ॥ এসৰ বিকান্ত শুনি, আনন্দিত গুণমণি, चयुरन भारेल कूलज.त।

ত্বরা করি মুবরাজ, চলিল নগর মাজ, অশা রাখি অতি ধিরি দিরি। দেখিছে নগর শোভা, দেবতার মনোলোভা, গৃহদ্বার কাঞ্চনে রচিয়া

মধ্যেতে চাঁদ্দী চক, করিতেছে কক মক, প্রস্তর প্রবালে সুখ্যিত ঃ

বালাখানা পরে কত, নহবত শত শত.

মরি কিবা ২তেছে আগুয়াজ। নুপতি মগুর মাজে, সেমাগুণ নামা মাজে,

দত্তে সন্দে করিছে কাওয়াজ।। এমতে বাজিছে দানা, মূনস পিনাক বীণা-

সওস্থার বাজে সপ্তসরা।

কে বর্ণিতে পারে কত, যাগে বাদ্য কত মত,

পাংগ্মার কিবা মনোছরা।। দো. য়ে নগর শোভা, মণিকাঞ্নের প্রভা,

• প্রশংসা করিল বছতর।

সম্মুখে দেখিল কিবা, সরোবর মনোলোভা, সোধানেতে বঁখা মনোক্র।

गितिशास्त्र श्रुष्त्राम, द्विशास्त्र सुर्गाखन, शक्त रहा मनाग्रा श्रवत्त ।

শ্বেত রক্ত নীল পীত, কত পুষ্প প্রাক্ষ চিত, প্রাণ প্রাণ্ডের মদনে।। স্থাকুল হইয়ে প্রাণ্ডে, বসিলেন সেই স্থানে, মনোমধ্যে এইবেগ ভাবিত। ভারু অস্তাচলে বায়, দামিনী আগত প্রায়, বানা হেতু বিশেষ চিস্তিত। रहम कारल खन वाशी, अन अक शाशामिती. নাম তার কেতকা স্বন্দরী। चादक्त क बाम १'७, एवं के हि मामा मक, रामा मुर्च छ्वार जर्ती । ধেরি কুমারের রূপ, বলে এ কি অপরূপ, धमन ना एहति दक्त परम । যদি করে বালে বংগা, তবে পূবে মন আশা, महानतमः लास गाहे बातम ॥ এড বলি হেগে হেসে, জিজানে কুমারে এসে. কেবা ভূমি কোথা ভাগমন। আছ কোথা বাদা করি, বল মোত্রে সত্য করি বিস্তারিত তব দ্বিবরণ।। धार श्रीम नृशक्षर, माम राज्ञ श्रीविष्ड, े बतन अन विवत् करे।

দেশ পর্যাটন তরে, আইলাম এনগরে,
তত্ত্ব করি বাসং পাই কই।।
শুনি গোপী পুন কয়, শুন শুন মহাশয়,
আমি অতি তুংথী গোয়া লিনী।
তথ্য বেচি রাজবাদে, সবে মোরে ভালব নে

নিজ বাসে থাকি একাকিনী !!

ঘূণ! যদি নাহি হয়, এস তবে নমালয়,

বাসা দিয়ে রাখিব ততমে :

বখন যা চাবে তুমি, মিলাইয়ে দিব আমি,

সাধ্য মম অসাধ্য সাধনে।
রায় ভাবে ভাল হল, কালী মোরে মিলাইল,
ইহা হতে পাইব উদ্দেশ।
স্থালে শুনিতে পাব, ভূপের তদ্ম সব,

বিশেষ পক্ষীর সবিশেষ।
এই যুক্তি করি সার, কচে নরেশ কুমার,
তুমি মম মার সম মানী।
ভিজ বলে সত্য বাণী, যাহ সঙ্গে গুণমান,

মিলেগেল মানী কি হিতাশী।

### কেতকীর নিবা**সে কুমারে**র গম্ন।

ভনশ্বর চুর্গা বলি চলিল ত্বরিত ! : পেয়ালিনা বাদে আদি চল উপনীত ৷ वाहित्य जेखर १० (क स्की राजनी । कुमारत हाथिन नाम चिच यञ्च कति 🗈 পানি দিল ধরে ধরে নানা উপহার। छोडमारच छहेरचम तालात सुमात । প্রভাত কালেতে উঠি অরি ভগবান। প্রাতঃ ক্লভা যে কিছু করিল সমাধান ; মধ্যকৈতে লান পূজা করি নিয়মিত : রজন ভোজন আদি করিল ত্রিভা উত্তম শ্रামে পরে করিয়ে শ্রন। \* মনে মনে চিন্তা করে নিজ প্রয়োজন।। কি মতে পাইৰ আমি সেই পক্ষিৰৱে। নানা ভাবে ভাবি ভা<mark>ৰ অনুভব করে</mark>॥ মাসী বলি কেভকারে ডাকিল তথন। আজ মত্র এল গোপী কুমার সদন॥

द्वाग हामि दल मामि खनह वहन। শুলিবারে ইচ্ছা এই দেশ বিবরণ চ ব্রজার চহিত্র কিব। কহু ন। সামারে । কি মত প্রভাব তাঁৰ ইচ্ছা শুনিবারে॥ কনা। পুত্র কয় জং কিবা নাম চার। বিভারিরে কহু দে সকল সমচার। দেওকী হাসিয়ে বলে শুন হে স্কুজন। বড়ই এত:প ৰড় পণ্ডিত রাজন !৷ পুতাধীন নরপতি কন্যা এক জন। অপরপ কগ তার অতি ভ্লকণ॥ প্রাদশ ব্য হেন ব্য়ঃক্রেম তার । বিষ্ণের কারণ রাজা ভাবে অনিবার।। কল দেশ হতে এল রাজার নদন। जुष्क ख्वारन ए। भवारत ना रेकन वहरा॥ কি জানি কি মত লার বুরি:ভ না পারি। নাহিক কপালে বিয়ে অমুভব করি॥ রসিকা রমণী বড় এই ভার পণ। 🔭 👵 যে হবে রনিক ভারে করিবে বরণ। ু ভূমি ৰূপবান বট শাল্কেতে নিপুণ। रेश विष भात वृक्षि कृत्व उव श्रम ॥

যদি বল বলি গিয়ে রাজার সদন।
কুমার বলিল নাসী কিবা প্রয়োজন।
না জানি তাহার গুণ কি মত হইবে।
বুঝিতে পারিলে করি পরিশ্রম তবে।
সাড়া দিয়ে সাড়া যেন পার গৃহত্তর।
পারি কি না পারি আগে পাই তার তের॥
এত শুনি কেতকী তাহতে দিল সায়।
দিক রূপ। বলে দিক সুগরেদ গায়॥

## কুন)রের রাজ ভবনে কেতকীর সঙ্গে গমন।

ভাবে রায় ভদন্তরে, কেমনে পাইব ভারে,
মনে মনে করে বিবেচনা।
হয় প্রাণেতুত আকুল, নাহি পায় কোন কুল,
বিদি নানা করয়ে ভাবনা।
না হেয়ে মদন বাণে, দগ্ধ করে মম প্রাণে,
কি করিব ইহার উপায়।
বুঝি বিধি নিজ করে, গঠিল সে প্রেয়দীরে,
ভেদিবারে আমার ক্ষর।।

कर्ण कर्ष हाम काम, धारा कि घरिन माम, আসিয়াছি শুক পর্ফা তরে। নাহি পাই ভার টের, হইল বিশ্ম কের মনোজঃখ কৃষ্টিৰ ক হোৱে !! रम ज्ञुश नहीं পाधात, स्कान करेंग भात, क्त इदब मा रमांथ हा डेशास। পাব বি না পায় তারে, ইচ্ছা হয় দেখিবারে, ভাবে মনে নরেশ ওলয়।। ट्र कारन भाषानियों मञ्जू काने घटन धरी, ত্বন্ধ দিতে ভূগের ভবনে। তা দেখি নাগর রায়, চিন্তায় চিন্তিত কার, বলে যাৰ কেমন বিধানে :। বিধির বিধির বর্ণে, যাইতে স্থক্তরী পার্ণে, দিক্ষ মন্ত হইল অরণ। गर्खेत প্रভाব जना, मिथिए ना शाय जना, পুলকিত কুমায় তথ্য ॥ চলিল কেডকী সঙ্গে, আগনার মনোরকে, খনে ভাবি মহেশনোহিনী। मीन विकासिक मात्र, याद सारू मृशालकः,

ामधा भारत नद्धमानमन्त्री ।। 🖔 🧸

# कूमांदात नृश कना। मर्मन।

তলিল কুমার ভবে কেডকীর সঙ্গে। নং পারে দেখিতে কেই মন্তের তরজে !! উপনীত রাজ বানে কেতকী স্থন্দরী 🗁 কুমার সংস্থাব বড় দেখি রাজপুরীনা ष्ट्रांश्वत ७४न (माञ) खूबन स्माह्न । দুটি মাত রূপস্ত বিমে।হিত সন।। জুগ্ধ দিতে কেতকী গেলেন রাণী কাছে : মনো রঞ্চে চলে রার তার পাছে পাছে ! এই মতে স্বাক্তর ভবন দেখিল। রাজ নন্দিনার পাশে শেষেতে চলিল।। রব্র পালক্ষেতে তথা মন্মথমোহিনী। সখীগণ বিনায়ে দিতেছে শিরে বেণী।। ত একেত ৰপনী তাহে বয়ন যোড়শী।' ৰূপছটা দেখি মান হয় তায় শশী !! , অধিক কি কব ৰূপ ভুবনমোহিনী। मिश जनरमञ्ज्ञार मुकास मामिनी।। কপদীর ছেন কপ কুমার ছেরিয়ে। 🕒 তর্ক করি নানা সত বা পার ভাবিয়ে।

ভবেতে: কুমার মনে ভাবিরে উপায়: ছবিত ভড়িত প্রায় আইল বাসায়।। পরেতে কেওক। রঙ্গে নানা বক্ষা করি। উপনীত ধনী পত্ৰৰ গমনেতে করী।। । लंदक विद्रश्चिति ए। दह दमक छेन्द्र । 'মরার অনিল আগর বহিছে তথায়।। পিকাণ কুহুস্থার করিতেছে গান: শুনি গেই ধনি উড়ে ধনীর পরাণ ৷: বিষম ছালার বাস্ত নিশি দিন প্রাণী। कुश भारत छारत द्या मृत्या मन्त्री॥ ইতি মধ্যে উত্তরিল কেত্রু আসিয়ে। কি কর নাভিনি বলি সম্ভাষিল গিয়ে॥ আয় বলি স্থরসিনী সম্বাধিল তারে। বলে তব স্নেহলেশ নাহি নাতিনীরে ॥ শাপন আপন করি ভারি যার ভরে। সে জন আপন করি না জানে অন্তবে।। প্রেমাসজিযুক্ত চিত্ত হয় জেই জন। ष्यमा कृत्य कृथी मिट्टे विश्वाप कृतम ॥ এত:শুনি হাসি হাসি কহে গোয়ালিমী। ক্রপা করি শুন আরো এদানীর বাণী ॥

তোসার পালিত দেহ করিয়ে ধারণ i ত্র উপকার না করিব কি কারণ।। নিজা অ:মি তব পাশে যাতারাত করি! কোন কথা মম প্রতি না কহ স্তব্দরি !! যে তব দাৰুণ প্ৰণ মবেশ মন্দিনি। প্রেমের মহিমা তুমি জানিবে কি ধিন।। কেন আৰু ঠাট ছলা কৰু সম প্ৰশে। 5% तह भीघ जाबि याहे निज वारम अर्थे मए उमानाःम कथा पुरे करन । পরে শোপী বাহডিল আপন ভবনে।। আদা অস্ত্র জাসিয়ে কহিল গুণাকরে। শুনি তুই বররায় মাপন হারর।। কেতকীর কথা রায় করিয়ে অবণ 😥 অন্তরে হইল আশা আমি উদ্দীপন !! विक्न इंहेर्स आत्र बाल इन चिंछ। নলে কিৰূপেতে পাৰ সেই বুসবতী ॥ যদি কোন মতে গিরে আইলাম হেরে। উপার না পাই কিন্তু কপালের ফেরে।। বিধাতা বিগুণ খারে ঘটে তার হেনা মিছে মিছি ভার জনো ভাবি আমি কৈন।। বিজ বলে রশরকে কি ভাব ছতাশ। নিশি যোগে যা২ পূর্ণ হবে তব আনা।

# कूमादात निनाद्याका भगत्ना-क्याम !

তদন্তর নৃপস্তত, মানে হয়ে হর্যুত্ य(इटा छुनाती बद्राबाद । কেনন দনগু যাৰ, এই মড অলুভর, करत तात पालन अग्रत ॥ দিবাভাগে গেলে ভগা, হইবে সকল রুথা, कार्य। भिष्ण मा स्टान् कथन । নৈপিতিক ছলনা করি নিশাবোধে ভার পুরি, যাব হেন কৈল নিৰূপ।। এপ ভাবি কেভকারে, ডালিয়ে কুমার ধীরে, **छ** दूब छा बूती-क्ति रूग। देनवतन विना वन, नाहि मिनि अना वन, শুন এই করেছি নির্ণয়॥ রাত্রি ক্লোগে গৃহে বদি, রব আদি সারা নিশি, করিব ঈশ্বর সারাধন।

नक्रांन कहित्व बाद, नाहि शाद महाइ के, भिक्ष मा १६८० ८८ सामन ।: শুনিয়ে কেতকী কয়, কি কাজ সাগত ভাত্ৰ, মোর করি ভোষাকে সন্ধান। ধাতে হয় সিদ্ধ বাজ, ভাষা কর ধবরাজ, ज्ञि भक्षं भारत ज्ञानवान गान এড বলি পূর্বনত, অবি জায়েজন যত. धरत धात निम कुमारहरत । বুল্ন ভোজন বাঘ, সমুদার করি সায়, भारत कतिए भागाभारत ।। ক্ষাার আশার কত, যমে মাম চিন্ত বিত, জাশাপুণ রহিল মর্থ। **्रम** कोटल निवा शह, तक मी रूप **आर्गे**ड, (न.श चिनाम इल मुधी। তুখে শ্ব্যা পরিহরি, উঠে রায় ত্র্রা করি, मकार्ति कविल्यमाधान। তদন্তর নৃপসূত, হইলেন সুসজ্জিত, वाहेर्ड ख्रुकती विमामान।। মন্ত্র পাঁড় চলে রায়, কেছ ন। দেখিতে পাঃ

উপনীত কন্যার জারারে ৷

দাস দাসী যত জন, নাহি পায় দর্শন, গোপনে এছিল তথাকানে !!

গ্রহর বামিনী শ্বে, নিজাগত হল পরে,

श्रीद्र वीद्र हत्न अस्ताय ।

কিঞ্চিত্তিয়ে মনে, একেলিয়ে যে সদনে,

দেবে কত গালহ তথায়।।

भवुष्यार्थः आरष्ट् थातः, तक्षः भागास्काशस्यः, मधीन्नव स्ता स्थाकास्त्रिः।

তার মন্যে শুশোভিত, কাঞ্চনতে সনির্দিত,
স্কুণিপ্ত এন্তরে প্রবেক্তিতা।

म शारनाक शहर हती, दिखा योह स्वनती,

বেন ভূমে চন্দ্রের উদয়।

মাণিকের অভরণ, অঞ্চে বাছে স্থশোভন,

मिदि ताम इङ्ग विषयः॥

र्मान भाग भड, उर्क कति म्श्रञ्ख,

কিছু হির করিতে নারিল।

ক্ষণে মনে করে রায়, স্থবর্ণ লতার প্রান্ত, নহে কিহা হইবে তর্ন।।

বুঝি তার অভিপ্রায়, মৃতু হাসি দিল কর,

द्रमञ्जब के रम मुन्दती।

কন্যার সমান কান্তি, অন্য ৰূপ তব জাই। শুন ৰূপ বা কহিতে পারি।।

## ছিজ কর্তৃক রূপ বর্ণন।

কেন রসময় রুমি ভাবিত্ব অন্তরে । 🔻 ऋर्गलणः ख्याम पात मुशमानिमेरात ॥ চন্দ্ৰ কি হুইবে ও কপের প্রাণিৰূপ। क्कि हुई इंडेस्स ना इंडेस्स खुक्स ।। একপের নম কপ না দেখি নয়ন। উপমা দিরার যোগ্য দি আছে ভাবনে।। मिथ नीम भड़िराख यक माछ। करत। वािशिल भट्रम हास्य द्या जनधात ॥ চাঁচর চিকুরে ও যে দেখ পুষ্ঠে বেণী**।**। পৰাদের ভয়ে ওতো লুকাইয়ে কণী !! ভালের উপরে দেখ সিন্দুরের শোভা না হয় তুলনা যাহে অরুণের আভা।। মুগমদ বিল্ডু ছথি লম্বিত হয়েছে। অরণ গ্রাসিতে যেন রাছতে চলেছে।।

🏂 हात्र निरम्हराङ किया इन्हरू द्वर्था : বিভায়ার চন্দু আদি বেন দিল দেখা !৷ ভুগর ভঞ্মি। কিবা পরশিমে শ্রুভি। চড়াইয়ে গুণ যেন আছে রতিপতি।। শুক চঞ্জিন নাসা বড়ই স্কর : িরজনে জড়িত ভাকে জুলিছে বেশঃ 🖖 শোজিত মুকুতা ভাহে দীধি করে মণি। रेक्टएत मूट्य प्यन कन्नमान क्री ।। কি দিব ভুজনা সায় মুখেন উপনা ! লগতে না পাই কিছু কলি ভার দীমা।। অনঞ্আফ্ল ইয় যথন দেখিয়ে ! তাহার তুলনা যোগ্য না পাই ভাবিরে।। অরণ জিনিয়ে কিবা অধর স্থন্দর। ना स्हेरित शकु वित्र छाहाह लामत !! তার্যার মধ্যেতে কিবা দশন শোভিত। कुक कुद्धरमञ्ज (यम अक्रम हिन्छ।।. निवधा मोनामु ब चाहि श्रेक्षित। তারক ভ্রমর কিবা তাহাতে শোভিত।। নাচিছে খঞ্জন কিবা কমল উপরে। কিয়া শশি রশ্মি পান করমে চর্কোরে।।

প্রাতি মূলে রতন কু ওল শোভা ধরে किरिएर भर्म भूभी यलमल करहें। जाटक रामि अर्क मुश वनन अक्षरन i शूर्व एक्तु एाटक रयम धन स्मध मटन ॥ কিবা সে উন্নভ কুচ অতি স্থগোভিত सुरमक निश्रात ध्वन गत्रम छ निज्त র্ভন জড়িত মণি বংফা সুশোভন । উদয় থিরিতে খেন উদিত ভপন 🛚 নাভি কুপ হইতে উদিত লোমাবলি: স্থা আশে ধায় যেন পিপীলিকা চলি। মাণিক মুণাল বিনি ভুজ শৌভা করে। স্তল প্রদা প্রাক্ষ্টিত যেন তাল পরে। ফতেক কহিব আর শুন রসরাস। বিলয়ে কি ফল সিদ্ধা কর নিজ কাজ ব

# কুমারের স্থন্দরীকে দর্শন ও চিহ্ন রাখা।

তবে নৃপক্ত, হয়ে হয<sup>়</sup> যুত, : উপনীত দে বদনে। দৈখি ৰূপ ভার, ভাবে চমৎকার, व्यदेशमा इहेट्य खादन ॥ दटन दिवि इस, व्यामादत मनत्र द मना शृत्रा उत्व । नजुरा कीयन, कि कारक शावन, यञ्जभ महिरत उदर । मद्भाभ सम्बन, कतिद्ध विश्वन, মনেতে ভাবিয়ে ভার। **किञ्च मा वाधिएस, याहेव कितिएस,** এ নম উচিত সোৰ ধ এই মত স্থির, করিয়ে স্থারি, বক্ত বদলিয়ে লয় ৷ তাষুলের রাগ, দিয়ে ভাহে দাগ, বাহড়িয়ে চলে রায়। রাখি প্রাণ মন, করিয়ে গমন, প্রবেশে কেতকী পুরে। भरत्वी श्रद्धा द्वारा, व्याश्रम नेशास, किছू क्रवास्ट्रत, मिना श्रव कुदेत, উঠি পরে রসময়।

প্রতিঃ ফ্লুডা যত, সারিয়ে ভারত, ভাকিয়ে গোপীরে কয়। अन भाम जूनि, यार मीखनामी, নুপৰালা বরাবর । कि करत रम जन, आनि विकास, অগুসি বল শীঘা ভর !৷ क्षारम कुन्नती, शाखायान कति, আপন অক্টেড চায়। ज्दक्रत राजन, कृति नितीक्ष्य, হুত'শ ভাবয়ে তায়।। वत्त त्क इलिएस, वाम वृह्तिएस, কেমনে লইয়ে যায় : পুন ধনী হেরে, বসন উপরে, তামুলের দাগ তার।। কে করিল হেন, না বুঝি কারণ, 🦠 যে হক চোরের কমা 🎶 🕔 यमि क्रांत्र बनि, क्लन यादेव छनि, ना वृद्धि हेश्रह मण्डा ।। एक कि कानव, करम् कि: शानव, ্রথার কাজ্যর।

मुशादत क्षर्वी, व्याष्ट्र शृति धित्रि, কেমনে পাইল দার i! চোর ভিন্ন মন, কে করে হরণ, कतिस्त्र खाट' विकल। গেল কোথাকারে, নহে ধরি ভারে, উচিত দিতাম কল । ছিলাম নিজায়, কি করিব হায়, কি কাল ঘুমের ঘোর। कृषि कांत्राशाद्य, विक देकदन छाद्य. তবে দে জ্বানিত চোর।। কিবা ভার নাম, কোথাকারে ধাম, কে জানে তাহার মূল। অশেষ প্রকারে, ভাবি ধনী পরে, প্রাণেতে হয় আকুল।। পরে ছলে धनी, मात्री विल धनि, করিল কোকিল স্বরে। অমনি সবায়, আসিয়ে তথায়, দাঁড়াইল যোড়করে॥ चूर्निष्ठ लाग्ट्स, कटर नर्स खटन, নাহিক তোদের ভয়।

দকলে থাকিতে, আমার পুরিতে, কেবা আসে কেবা যায়! বুঝিরু ভোদেরি, আছয়ে চাতুরী, নহে ভান্য কেবা পারে। না গারে দেবতা, কাহার যোগাত: আসি মম বাস হরে॥ यमाभि व्याभन, ताथिएव कीवन. অন্মেৰণ কর তার: मरह दिপतीज, हरेरव डेहिंड, প্রাণ বাঁচা হবে ভার।। শুনি এই ভাষ, স্বার ত্রাস, कंत्रवाद्ध भद्य करा। ভবাজিত জনে, এমত বচনে, দোধা না উচিত হয়।। মোরা দাসী তব, হেন অসম্ভব, কে করিল জানে কেবা। বিচারে আপনি, দেখ ঠাকুরাণি, উচিত হইবে ষেবা॥ বুরিরে নির্দোষ, তাজি নিজ রোষ, ठिन्ना कर्त मदद स्मिल।

हिन कात्न उथा, जाभी छेशनीज,

कि कर नाजिन विन ::

किस वत्न जान, रहेल मकन,

सूक्ति वर जाभी छातन।

कात्न नाना एस. युक्ति त्म क्षरनः

नाना मठ सुक्ति कात्म ।

## গোপী প্রতি রাজকন্যার মন্ত্রণা জিজ্ঞাসা।

স্থানরী বিশুর করি, গোপিকার করে ধরি,
প্রকাশিছে মন অভিলাব।
নিশি বিবরণ বত করাইছে অবগত,
মনোমধ্যে হইরে উনাস!
আদি কেবা মম পুরে, বাস পরিণর করে,
তামূলের দাগ দিয়ে তায়।
মনঃ প্রাণ করি চুরি, গেল সে করি চাতুরী,
তাহাতে দহিছে মম কায়।।
কেমনে এমন বাসে, আইল বাকি সাহসে,

প্রশিরে মম কায়, ঘটাইল হেন দায়, मन दङ् करत छेठा हैन।। कि श्वरंग रत्र शुवंभिन, विकल कतिल श्वाना, সে জনে কেমনে পাওয়া যায়। ভার দর্শন বিনে, স্থির নাহি হয় প্রাণে, অতএব কহ দে উপায়॥ তুমি বিনা এই কর্মা কে বুঝিতে পারে মর্মা मादत नाहि कत हि दक्षमा। গুনা আছে তব যশ, জান ভাল প্রেমরুদ, व्यक्षीनीदत्र ना (में यञ्जना ॥ শুনিয়ে এসৰ বাণী, যু ড়য়ে যুগল পাণি, वल लानी यामि कृष थानी! মোরে এত সমাদর, অকারণ কেন কর, **खन ७८३ नर्द्धभनिक्**नि ॥ কি ভাব ভাবনা তার, যে মত যে বাঞ্চা বার. উপায়ে উপায় হয় যত। এই যুক্তি বলি আমি, কপট নিদ্রায় তুমি, শয়নে রহিও পূর্বমত।। व्यवना मिविएंड भारत, नर्क कार्या निक रदैन,

भूर्व इत्व मन खाँखनाय।

খত এব রাজবালা, হইল অধিক বেলা, আজ্ঞা হলে যাই নিজ বাস।। এত বলি গোয়ালিনী, আসি নিজ বাসে ধনী,

क्गादत कतिल निर्देशन।

শুনেরে চতুর রায়, চাতুরী করিয়ে কয়, কোন কালে না শুনি এমন।।

তদন্তর নৃপস্কত, দিবা কাষ্য পূর্ব্বমত, সাধিলেন গোপীর ভবনে !

হেতা গৃহে রসবতী, হয়ে অতি ম্লান মতি, ভাবে তারে পাব কতক্ষণে।।

হেন কালে দিনকরে, দিবা অবসান করে, অন্তাচলে ক্রিল গমন।

क्येवत्न कीवन वाला, वक्क विद्राह वाक्ना, मत्नाष्ट्रः श्व भूतिल नहन ॥

করি নিশি দরশন, দোঁহার সম্ভোষ মন,

निक निक युक्ति दित करत।

সময় হইল যবে, কপট নিদ্রায় তবে,

রহে ধনী নিজ শ্যা পরে ॥

অনন্তর যুবরাজ, সাধিতে আপন কাজ, চলিলেন স্বন্ধরীর স্থানে। মস্ত্র তেকে কোন জন, নাহি পায় দরশন,
উপনীত ধনী বিদামানে।।
দেখি পূর্ব্বমত সত, আছে সবে নিজান্তিত,
কি করিব কুমার ভাবিছে।
করে গেছি কালি যাহা, বিদিত হয়েছে তাই
করি জানিতে পারে পাছে।।
ভিজ বলে রসরাজ, সাবধানে সাধ কাজ,
কপট নিজায় আছে ধনা।
ভানিতে পারিলে যত, মন্ত্রণা হইবে হত,
বিবেচনা কর গুণমণি।।

কুমারের পুনর্বার ছলনা।
এই মত যুক্তি করি কুমার তংকপে।
কি ছলে ছলিব আজি ভাবে মনে মনে।
পরে যুক্তি স্থির করি মজের বলেতে।
গৃহে প্রবেশিয়ে বসে তার নিকটেতে।
দেখিছে স্থবর্ণ কত তাযুল আখার।
রজতে নির্মিত কত শত আছে আর॥
নিঃশব্দে তাহার আছাদন খশাইল।
রজত আখার স্বর্ণতে মিশাইল।

তদন্তর তথা হতে করিরে গমন। लाशी बारम উखहिल नरदर्भनक्त । शृद्धमञ्ज्ञाशत्त्र भग्नत्म थाकिरम् । निया सिनि करत हिन्छा व्यश्नमी वाशिए। । বিগানে ৰূপনী দিবা নিশি আসা আশে। না দেখি নিরাশা ভাবে মনের ছতাশে। দেখে ভারা অাথিতারা হয়ে গেল স্থিয়। সুখহরা সুখতারা হইল বাহির। অধিকন্ত নিজার কাতর জাগরণে। मुश्र खकाहेन जारह ना रहति तम करन ह श्रजाट উঠিয়ে भनी स्ट्रेन प्रथम । অদর্শন ছতাশন তাহাতে প্রবল ! ত্রবিল দেবতা মারা নর কভু নয়। वाषिक इहेरत्र खारण मशीनरण कत्र। খলো দখি প্রেমানলে আমার হৃদয়। দত্ন হতেছে বল কি করি উপায়। विद्रह् अभन खाला ना जानि कथन 🖂 🕆 ना ट्रांत अन्नवार्य अजीत स्ट्न । छनि मधीनन मर्द करह मकस्रद । बक्त छेठना इरस किरमंत्र कांत्ररा

স্থির হও যে হউক সে হবে বিদিত। আজি কালি পরে তারে পাইবে নিশ্চিত 🛭 এমত প্রবোধ বাক্য বুঝায় তাহারে। কুমারের কথা কিছু গুন তার পরে 🖡 প্রভাতে উঠিয়ে পূর্ব্বমত কার্যা ৰত। ক্রমে ক্রমে সে সকল সারিল ভাবত **।** কেতকী আপন কার্য্য সারি তার পরে। ত্তধের যোগান দিতে চলে রাজপুরে ! একে একে नकल उवत्न हुध निरंश। কন্যার আগারে পরে উত্তরিল গিয়ে। पिथिता शक्ताती उत्व कहिट नानिन। ভোমার মন্ত্রণা গোপি বিফল হইল। আর যা হয়েছে নিশি যোগের ভিতরে সে সকল বৃত্তান্ত কহিল গোপিকারে। শুনিয়ে কেতকী কয় নায়িকা সদনে। व्यवाक हरब्रोहि व व्याक्या कथा स्टान्।। শুনেছি দেখেছি বহু করি এই কাজ। তোমার কার্যেতে বড় পাইলাম লাজ। मम कर्म नटह जात खन दमर्डि। বুরিয়ে করহ যেবা লয় তব মৃতি।।-

এত বলি ছুগু দিয়ে গোপী চলি গেল। নাযিকা শুনিয়ে মনে ভাবিতে লাগিল ! কবিবে গোপিকা হির আছিল বিশ্বাস: এক্ষুণে সে সব মম হইল নিরাশ।। अंडित आमात मना इस अंत जत : নিবারণ কিনে হবে ভাবি নিরম্বর ॥ প্রমত্ত চঞ্চল চিত্ত চকোর আমার। ব্যাকুল হয়েছে বড় নাহিক নিস্তার। এৰপ করিয়ে ধনী ভাবিছে অন্তরে। গোপী গিয়ে সমুদায় কহে কুমারেরে । শুনিরে পূর্বের মত চাতুরীতে রায়। অন্তরে আহ্লাদ মুখে বলে একি দায়॥ দ্রিছ বলে ভাল রায় বিদেশ আসিয়ে। গোপনে করিছ মঙ্গা দুতী ভাঁড়াইয়ে।

রাজকন্যার খেদোক্তি।
তদন্তর শুন সব রসিক স্কন।
বে ৰূপ হইল পরে ভার বিবরণ।
নিতা নিতা রসরাজ স্কানীর পুরে।
গমন করেন কেহু জানিতে না পারে।

এक निम नेश्वल हिटल मदन मदन। আরু কত যাতায়াত করিব সেখানে। এমত ভাবনা আরু কতকাল রবে। আমরি কেমনে কর্ম সিদ্ধ হবে করে । কি ভাব ভাবয়ে মোরে জানিব কি ভাবে T সে ভাব ভাবিয়ে রায় বিমোহিত ভাবে। তার পরে ভির করি নরেশ নক্ষম! রীতি মত কর্ম যত করে সমাপন। দিবা শেষে কেতকীয়ে কহিল ডাকিয়ে আ'নি একবার আসি মগর ভ্রমিয়ে।। এভ বলি গেল চলি মন অভিলাষে। মন্তের প্রভাবে রাজননিদনীর পালে।। অপেনার গুণাগুণ করিতে প্রবণ! রহিলেন গুণাকর হইয়ে গোপন।। এখানে বিচ্ছেদানলে নরেশ তুহিতা। দিবা নিশি আছে ধনী ধরণী পতিতা।। বার বার ধারা বহে কুরক্ষ নয়নে। শ্যুৰে স্থপনে দলা জাগিতেছে মনে। वितर अनारभ कच् रहडन त्रहिछ। উঠি পুনর্বার আরে। হয় সচিব্রিত।।

वाल क छात्रिज आर्ग माधिरलक वीम । কি ৰূপে পাইৰ আমি তার স্বসংবাদ। ति इक भ इक छात भाषां इस्स । अपूर्णा मतला वर्ध इट्टा निम्स !! পরশিয়ে মম অঞ্স মজাইল মন। द्यकारम कि लाज वृति धोवन वजन । এসব শুনিয়ে রায় মনেতে ভাবিল। স্থন্দরীর খেদে খেদ অধিক বাড়িল !! মিলন সলিল আসা উথলি অন্তরে। ত্বরিত্তড়িত্প্রায় দেখা দিল পরে।। ক্ষণ মাত্র তথা হতে চলি গেল দূরে। উত্তরিল রসরাজ কেতকীর পুরে।। এইখনে স্থন্দরী হেরি বলি আহামরি। অধরা হইরে পড়ে ধরার উপরি।। ক্রত আসি যত দাসী তোলে সনোচুথে। স্থাদিত জল আনি কেই দের মুখে।। করবোড় করি কহে কহ বিবরণ। रुठाज् अटेमर्ग इत्न किट्मत कातन ॥ কুলের কামিনী ভূমি নাহি কর লাজ। করিবে কলক অকলক কুল মাজ।।

ধৈষ্য ধর রাজবালা স্থির কর মন।
পাছে কেহ গুনে এ সকল বিবরণ।।
শুনি ধনী তা সবারে উত্তর না দিল।
মনাগুণে মনে মনে ভাবিতে লাগিম।।
দিজ বলে রসবতি চিন্তা কি তাহার।
যায় লাগি চিন্ত চিন্তা অবিক উহার।।

### কুমারের মিলনের উপায় চিন্তা!

হেতা গোপীবাদে রায়, চিন্তায় চিন্তিত কায়
হয়ে শেবে হির করে মনে।
দেখাইতে কারিগরি, মনেতে মানস করি,
করে শেবে কৌশল যতনে।
চিত্রপটে নিজ কায়, চিত্র করে রসরায়,
পরম স্থলর চমৎকার।
দেখি মনমথ মন, অমনি হয় মোহন,
অবিক বর্ণনা করা ভার।
বিভীয়ত মহোদয়, কামিনীর প্রেময়য়,

ভাষাতে তন্তুর তরি, ভাসাইতে ইচ্ছা করি,
নিজ প্রিচয় তৎপর ॥
বিনয়ে লিখিল যত, বর্ণনা কি হয় তত,
পরে যাহা লিখিব কিঞ্চিত্।
অমুগ্রহে সর্বা জন, করিবেন নিরীক্ষণ,
দীন দিজে হয়ে ক্লপান্থিত।।

#### कुरादाद भव।

विवक्ता ।

হ্বধাসুথি তব মুখ দেখি হ্বধা প্রায়।
রংগহীনে প্রেয়দি লো দৃষ্টে প্রাণ যায়।
গিধিনী গঞ্জিত ক্রুতি শোভিত কুগুলে।
নিশি দিবা ভাবি দহি দুঃখ দাবানলে।
তরাও কটাক্ষ করি পূরাও বাসনা।
বড়ই চুর্বার মন নাহি শুনে মানা।
আশরে থাকিয়ে অতি হয়েছি আকুল।
শেষ কর যে সকল হবে প্রতিকুল।।
আছরে তোমাতে প্রেম জলধি জীবন।
সিন্ধু বিন্ধু দানে তবে কেন হে কুপ্র।।

এ আশে বঞ্চিত হলে হইব নিরাশ।
ইঙ্গিতে বুঝিয়ে মোর পূরহ প্রধান।।
দেহ দহে প্রেমানলে বিষম প্রমাদ।
শারের সহায় তাজি করহ প্রসাদ।।
মিলায়ে পদের আদা বর্ণ সঞ্চারিবে।।
তৃষ্ণাযুক্ত চাতকে কাতর না করিবে।।

#### কুমারের স্থন্দরী প্রতি পত্র প্রদান।

তমত করিমে লিখিয়ে রাম।
রাখিল বসনে বাঁধিয়ে তায়।।
ভাবিছে কথন হুইবে নিশি!
দেখিব যাইয়ে প্রাণ প্রেয়সী।।
হেন কালে গেল দিবসমণি।
আগত হুইল আসি রজনী।।
নিজ কাজ যত সারিয়ে পরে।
গোপীকে ছলিয়ে গমন করে।।
মন্তের প্রভাবে চলে নত্ত্রি।
কহু না দেখিল রূপ মাধুরী।।

প্রহরী যতেক আছিল ধারে। দেখিতে না পায় কেহ ভাহারে! ভবেত রুদিক বস্থাবেশে याहेरत छन्द्र भूत अरवरमा दम्बिल वित्रत्य देशित्छ धनी । বাৰ্কুল হইয়ে পড়ে ধর্তী 🙉 নাহি হে:র ছাজে বাস ভূষণ : এলাইড কেশ মান বদম।। ক্হিছে দারুণ কে দিল ছালা। এক কি সহিতে পারে অবলা।। যে দিল আমারে এত বাতনা। कर्म डाहात जाल हात मा॥ মানবে কভু কি পারে এমন। যে হকু সামানা নয় সে জন।। ভাহার সাহ্দে দি ধন্যবাদ। কেমনে এমন নাধে প্রমাদ !! আর না বাঁচিব ভার বিহনে। বল কে মিলায় আনি সে জনে।। মদন আগুন উঠিল ছলে। দ্বিশুণ বাডিল মল্যানিলে॥

এ ছুখের কথা কহিব কায়।
কে আছে আনিয়ে মিলায় তার॥
কি করি উপায় না দেখি কিছু।
আমার অদৃষ্টে কি হবে পিছু॥
একথা শ্রবণে খেদেতে রায়।
পত্রথানি দিল অমনি তায়॥
মন হারা হয়ে বাহির হল।
দেহ মাত্র লয়ে বাসাতে গেল!
এখানেতে পত্র পাইয়ে ধনী।
বলে আহা মরি কি গুণমণি!
জিজ বলে কেন ভাব বিসাদ।
পড় পাতি পাবে তার সংবাদ॥

## রসবতীর পত্র পাঠান্তে স্থা প্রতি উক্তি।

রসবতী, পড়ে পাতি, হয়ে অতি, উতলা।
ছংখ ত্যাগি, স্থ ভাগী, বঁধু লাগি ব্যাকুলা।
মানা মনে, নাহি মানে, প্রেমাগুনে, বাতনা।
কিসে পার, কারে কব, এই সব, ভাবনা।

হওঁ মতি, হয়ে অতি, দাসী প্রতি, ডাকিল।
হয়ে শাস্ত, আদা অন্ত, সে তদন্ত, কহিল।
আমি ঘারে, নাহি হেরে, শ্বর শরে বাথিত।
স্ববিস্থার, সমাচার, আহি তার, বিদিত।
এমগরে, বাম করে, কার পুরে, গোপদে।
শীঘ্র করে, আনি তারে, বাঁচা মোরে, জীবনে।
যতক্ষণ, সেই জন, নাহি আন, নিফটে।
একি দায়, হায় হায়, প্রাণ যায়, কপটে।
স্থানি হেন, বিবরণ, স্থাগণ, ধাইল।
রগো নগা, গিয়ে তথা, সব কথা কহিল।
রাসরাণী, ভাবে শুনি, একি বাণী, কি কহ।
বিজ কয়, যোগ্য হয়, দিতে তায়, বিবাহ।।

# দাসীগণ কর্ত্ক রাণী প্রতি সংবাদ প্রদান।

তদন্তর রাজরাণী দাসীরে জিল্ঞাসে। কহ বাণী ননিদনী এমন হল কিসে॥ শুনি দাসী যোড় করে কহিতে লাগিল। আদ্য শন্ত যে কিছু সকল নিবেদিল।।

ত্তবে রাণী এত শুনি ভূপতির পাশে। চুহিতার কথা যত মুদ্র মৃদ্র ভাষে।। বে ৰূপ আশ্ৰহ্যা কথা করেছে সে জন। বিস্তারিত সে দকল কলে বিবরণ।। রাজা বলে রাণি ভূমি জান পূর্বা যত। বিভা হেতু এসেছিল কত রাজস্কুত।। সে স্বারে ভন্রার না হল সম্ভি খেদে ভারা কোখা গেল ছাড়িয়ে বসতি 🖰 এখন হয়েছে তার ইচ্ছা বরিবারে। যা শুনালে হেন জনে পাব কি প্রকারে 🖯 দ্রশন টিফ হদি পাওয়া বায় ভাব। তবে দে করিতে কিছু পারি প্রতিকার 🛚 যাহ রাণী শীঘ্রগতি নন্দিনীর পুরে। य किंदु थोकरा हिङ्क अटम रन मारत ।। এমত শুনিয়ে রাণা চলিলেন ধেয়ে: স্রঞ্পী পুরি মধ্যে উত্তরিল গিয়ে॥ নারে দেখি স্বরঙ্গিনী লজ্জিত হইল। गुथ जूनि शृक्षगठ कथा ना कहिन।। ইঞ্জিতে বুঝিল রাণী ছুহিতার মন। लांभरन मानीरत वरन कर् अरहाजन।।

मानी भिरंश सिंह कथा स्वन्नतीरत 🗪। क्षित्य स्नार्की इन धूनक स्नाम ।। চিত্রপটে লেখা ছিল অন্তব ভারি। বাহির করিল শীঘ্র নরেশ কুমারি'!! রসময়ী পত্রী সহ আছিল মিলন। स्मन्ती लहेल छाइ। कतिए (इपन ! **क्ष**िभूक्षि हिन्न पर भिन पानी करहा। ভারা লয়ে। দিল গিয়ে দুপ বরাবরে॥ দেখিয়ে সন্ধোষ সাণী প্রতিমূর্ত্তি ভার। মনে মনে ভাবে একি ৰূপ চমৎকার !! সামান্য মনুধ্য বলি না ভাবয়ে মনে। আহ্বাদে নে পট লয়ে দিলেন রাজনে 🛭 হেরিয়ে মূরতি মহীপতি ক্ট চিত। বিশেষ ক্ষমতা জেনে হৃদে পুলকিত।। তদম্ভর পট লয়ে বসিয়ে সভায়। পাত্র মিত্র সভাগণে ভাকিল সবায় 🛊 . কহিতে লাগিল পরে পুরের রুজান্ত। হয়েছে আশ্র্যা বত তার আদা অস্ত্র।। শুনি সভাসদ্যত হইল বিসায়। बर्ण माहि छनि रहन ना इरव ना इश।

मल्हेंगात कर्मा अहे नाइ कमाहिए! দৈব।বীন কমা এই হইবে নিশ্চিত।। ভূপ বলে নর ২টে জেনেছি প্রকারে। পত লিখি গাখি গেছে কনাার আগারে !! এনেছে এদেশে সেই করিতে ভ্রমণ! এই দেখ দেই প্রতিমূর্ত্তির গঠন 🖰 এত বলি দিল কেলি সভা বিদ্যমানে। দেখি ৰূপ অপৰূপ ভাবে সৰে মনে।। एमछत् मूथ करह छन नर्काजन। কর তন্ত্র এনগরে স্বার ভবন।। ষধায় পাইবে তার করিতে সন্ধান। যতনে আনিৰে ভাৱে মম বিদামান !! স্কুমারী কন্যা মম অতি স্থরক্ষিণী। তার বিভা হেতু ভাবি দিবস রজনী॥ করি ভত্ত কভ স্থানে স্থপাত্র কারণে ! নাহি মিলে যোগ্য বর সদা চিন্তা মনে 🗓 বদি বিধি এই জনে মিলায় সদনে! मत्नामादेश मित जारत कना। तुलू धरन ॥ এত শুনি দ্বিজ কয় নিকটে রাজার ! যে যুক্তি করেছ এই উচিত ইহার ॥

#### দূতগণের কুমার অম্বেষণা

তদন্তর দাসগণ, নুপাভলয় সহঁকেন, অন্বেধণ কবে সে নগরে। সবার ভবনে ফিরি, সে জনে নাহিক ছেরি, মন জঃগে জু:খিত অন্তরে 🗓 পরে এই জনরর, পরস্পর শুনি সব, প্রজাগণ আসি মিলে তথা। স্থ্ৰাইয়ে তা সবায়, কিছু না <mark>শুনিতে</mark> পায়, ভাবে কিনে পাইব বারতা॥ এখানে কেভকী ধনী, শুনি এই সব বাণী, कुभारत कहिए विवत्। कुमात श्वितिस कर, किन मानी कत छर, रूटव याश विधित विश्वन ॥ কেতকী কহিছে পুন, নাহি জানি তব গুণ, নূপ কিন্তু কালান্তক কাল। আমি ছখিনী গোপিনী, ভাল মনদ নাহি জানি, পাছে মম ঘটয়ে জঞ্চাল।। **এই कथा (माँटिह इस्न, (इन कात्नाटिक उथाय, है** উপনীত নপ দৈনাগণ।

ব**র্মিনাছে** গুণাকর, যিনি কো**টি** শশ্ধর, দেখি চমকিত সর্বজন।।

প্রতিমূত্তি থাহা ছিল, তার সঙ্গে মিলাইন,

'भ्टिम (म् इडेल प्रेंग।

निकतेष रटम ७८४. ए। ५ कत कति मेटन,

बिरविभिन कुमात भनग ॥

শুন শুন মহকোর, ভূপদির অভিপ্রায়,

ভোগ্ন দরশন করিবারে।

অভতৰ গুৰ্জ্জ, না করি ইকাতে ব্যাক্স.

চল শীন্ত্র রাজ দরবারে।।

শুনিয়ে এরপ ভাষ, যাইতে ভূপের পাশ,

উরাদে কুমার করে বেশ।

একে ৰূপ চমৎকার, অধিক কি কৰ আরু,

दर्गना ना इत्र अविष्या । ।

চলিল দূতের সঙ্গে, ক্ষণেক মজে আভজে,

ভাবে মনে কি হবে সে গেলে। ধৃত্তপিণা দেখি মোর, হইয়ে রাগেতে ভোর,

না জানি বা কোন থেলা থেলে।। এখানেতে নরপতি, চিন্তায় চিন্তিত মতি,

नजानम् लहेरत्र नजात्र ।

হেন কালে ভ্তা সঙ্গে, কুমার আগিয়ে রঙ্গে,
সভা মাঝে হইল উদয়।।
দেখি ৰূপ অপৰূপ মনে মনে ভাবে ভূপ,
কে সটে কেমনে জানা খাবে।
দিজ বুঝি অভিপ্রায়, হেসে নৃপতিরে কয়,
প্রিচয় লহ টের পাবে!।

#### কুমারের পরিচয় এবং বিবাহ।

ভদন্তরে লইয়ে কুমারে সমাদরে।
বসঃইল সিংহাসনে ধরি ভার করে।
জিজ্ঞাসিল নররায় কিবা ভব নাম।
কাহার তন্য় তুমি কোথা তব ধাম।
দেব যক্ষ সকার কি হইবে মানব।
যে দেখি ভোমার কর্মা অতি অসম্ভব।
কভ শুনি নৃপস্থত নৃপতিরে কয়।
দেবতা দানব নহি শুন পরিচয়।।
কাঞ্চনের অধিপতি সত্যধৃতি রায়।
স্থরসেন নাম মম তাঁহার তন্য়।

দেবীদত্ত বিদ্ধ মন্ত্র আছিল আমার। भिर वित्य कति एक शाम्त्रया वराशात ॥ পুলকিত হয়ে ভূপ শুনি পরিচয়। মনে মনে করে এ সামান্য ব্যক্তি নয়। कना। (याभा दत ७३ ताकात नन्तन । **७** ज मिन (मृथि कना) कदिव अभ् १ ॥ তার পরে কুমারেরে কৃত্ে নূপ্রর। মম ক্লা কপে ধন্যা ভারে বিজ্ঞা কর 🛚 শুনিয়ে কুমার মনে আনন্দ অপার। 'অন্তরে আনন্দ মুখে না করে প্রচার দ বুঝি অভিপ্রায় রায় সভায় বসিয়ে। সভা জনে আত্মগণে কহিছে হাসিয়ে। শুন সবে সুর্ক্তিণী আমরে বালিকা। ৰূপে তার ত্রিভুবন মোহন কারিকা।। বিভা না করিবে পূর্বেছিল তার পণ। সম্মতি হয়েছে এবে করিতে বরণ 🛚 পূর্বেকত নৃপত্বত তার আশে আসে। নিরাশ ২ইয়ে গেল মনের হুতাশে 🛊 এই হেডু সর্বাদা অস্থুখ ছিল মোর। বিধাতা সদয় হয়ে ঘুচায় সে ঘোর 🏾

वह जान्वसार शाद्ध मा भारत जुवरम। ঈশ্বর ইচ্ছায় এবে মিলিল সদনে !! মম মন এইকণ বিভাদিত তার। मर्वेष्ठन आख्राजन केंद्र रेगांद्र ॥ ८इम व्हटन मामगरी इहें स चर्तत। निर्फाष्टिल स्ट्रालाङ्ग स्ट्रांस स्ट्राल यत् ॥ হালঝি দপণে ভিত্তি ক্রিক মড়িত। কত ছবি যিনি রবি তাহাতে খড়িত।। মিনেকারি সারি সারি হতে। স্ত্রিপ্তার। স্থানে স্থানে শোভা পায় ঝাড় চকৎকার !! स्राकामन म्थ्रमन शांद्र स्काज्या। र्थामा खरा मानाविथ दार्थ एटल एटल ॥ সাসি দ্বারা সব দার অতি স্থানোতন। কত আর কব তার করিয়ে বর্ণন !! তৎপরে তৎপর হয়ে দূতগণ গিয়ে। বাদ্যকর বহুতর আনিল ডাকিয়ে॥ স্থানে স্থানে কোন জনে পত্ৰ লয়ে গেল। নিমন্ত্রণ পেয়ে সবে আসিতে লাগিল। বাই ভাঁড় নট আদি আসি কও জন। भी उ वामा भटहारमत कार मर्केस्ट । ·

- M

নহবত্নান মত বাজে দিবা নিশি! वाटक टाल किवा द्वाल स्मध्त वाली ॥ ত্বপু বীণা শব্দ বিনা নাহি শুনি বাণী। ঘড়ি ঘড়ি বাঙ্গে ঘড়ি সাধ্য কি বাখানি !! অ'হ্লাদে হইয়ে নগ্রপতির মন। প্রভ দিনে প্রভ লয় কৈল নির্পণ।। কন্যা পাত্র দোঁহাকারে ব্সায়ে আসনে ! তইল হরিদ্রা আদি মাথায় যতনে 🛭 তার্প জল আনি দৌহে স্থান করাইল : मामाविष याज्द्र याज्य श्राहेता॥ নহী সবে মহোৎসবে নিমগ্র ইইয়ে। মনোদাথে নাজাইছে নূপের ভনয়ে॥ অলকা তিলকা দিল যা যেখানে সাজে। তারা মাজ দিজরাজ যেমন বিরাজে !! ষেমন নায়িকা যোগ্য নায়ক ভেমন। (यहे अरक याहा भारक फिल (महेकन।। তদন্তরে কুমারেরে বসায়ে আসনে। জী আচার ব্যবহার করে রামাগণে।। তার পর নৃপবর শুভক্ষণ করি। করে করে কুমারেরে সঁপিল কুমারী।।

নথা মেলি ছলাহলি আননদ অপার। বাদ্যভাগু মহাকাণ্ড আশ্চর্য ব্যাপার। এই ৰূপ দিল ভূপ বিভা বিধি মত। দীন দিজ করে ইহা সংক্ষেপে রচিত :

#### রামাগণের পরিছাস। মখীগণ ভদন্তরে, পরিহান করিবারে, বাসরেতে করিল গ্রম।

ভবনের শোভা করি, বসিলেন সংবি সারি, বুঝিবারে রমিক রতন।।

একে দে মোহন ৰূপ, আর তাহে রসকূপ, দেখি মন্মধেতে মজে সবে।

এক চিত্তে নির্কিণ, করি রহে সর্বজন, ভাবে সবে কিবা কথা করে।

পরে ধনীর সঞ্জনী, হাসি হাসি ক্রে বাণী, মনোচোর এই জন বটে।

আর কোথা পলাইবে, আছে সবে বুঝা যাবে, বদি আজি পেয়েছি নিকটে॥

কোন জন হাসি কয়, দেখি বড় ভয় হয়, পাছে মন কৰ্মাে হন। চোর সঙ্গে খালাপন, নাহি করে কোন জন।
পূর্বাপর কংহ সংখ্জন।

আর জন হাসি কয়, যা কহিলে নিথ্যা নয়-আর না সাজিবে সে চাতুরী।

किङ्क छन्न मारि जात. हेगाँउ या स्ट्रिकाडः कतिरुवन गाउनकुमाति ॥

শুনি কথা রসরাজ, না করিয়ে ক্ষণ রাজ, মৃত হাসি কচেন তথ্ন।

হেন বিপরীত ভাষে শুনিয়ে লাগে ভরাস,

চোর বল না বুঝি কারণ।।

তক বার দেখি যায়, প্রাণ মন সব যায়,

তরে মন কে হরিতে পারে।

শশধরে মূগ অঙ্গ, সেই ৰূপ একলন্ধ,

**(मशे मृद्य विद्युष्टन) कृद्य ।।** 

তবে যে মন্ত্রণা করে, রাজকন্যা পাশে মোরে, যন্ত্রণা দিবে কি অতিশয়।

আছি ভাহে উপনীত, যাহ। আছে মনোনীত, কর তাহা যাহা মনে লয়।।

্বাধি হৃদি কারাগারে, না হয় রাখুন মোর্ব। হামুন কটাক্ষ ভীক্ষুবাণ। নহে প্রেম রজ্জু বেড়ি, দেন মোর হাতে কড়ি, হৈদে দেন ৬ কুচ পাবাণ।।

কিন্ধর হইলে পরে, তারে ক্ষমা সবে করে, সর্বত্রতে এই বাবহার।

না জানি এ বেশাচার, কি আচার কি বিচার, ইজা যেই কর নে প্রকার !!

श्वि अत्रक्ष रागी, शतिर मृशर्भिनी,

বে মোর মানস ছিল, বিধি তাহা মিলাইল, কিন্তু এক আছেরে বাসনা॥

গোপনে যথন মেণরে, ছলি গেল ছলা করে, জানাইয়ে গুণ আগনার।

তাংহে মম পরিচয়, না পাইল রসময়,

আজি আমি স্থবিব সে ধার।।

হেন ছির করি মনে, ক্ছে স্থী স্থোধনে, শুন স্বে বচন আমার।

উররে উত্তর দিতে, দোষ নাহি কোন মতে, বিধিমতে বিধি বিধাতার ।

সামান্য ধনের চোরে, রাথে সবে কারাগারে, পদ বেড়ি বেড়ি দিয়া তায়।

এচোৱে উচিত বেই, সে ৰূপ য়দি বা দেই, প্রেমোদয়ে হবে প্রেমদার।। य हिन जामार প्रा, भिलाइ उ मुश्रस्त, র্সিক না হয়ে রাজি কর। বিধির যাবেদি খাকে, অবশ্য তা দটে তাকে, भाकी काजिमाभ कविवत । उत्त यनि गरत वन, शर्क कादा किरम इन, মে সব পরের উপদেশ। শন্ত মন্ত্র বংশ হেন, মজেছে আমার মন. এফণে সে ব্যক্ত স্বিশেষ।। श्वनि यङ भशी करा, मङ, वर्षे भिशा नम्र, ব্যাবে কোথা বুকে পিক স্বর। সংসারে রমণী পদ, রসিক অঞ্চ ভূষণ, ইথে সৰে করে হতাদর।। দুখিতে স্থসভা হলে, কাবা রস না থাকিলে, তবে ৰূপা নব্য কাল ভার। **ध्रेक्ष** राष्ट्र वाशी, कहिर्द्ध यर उकं धनी, গুনি কথা কহিছে কুমার!। বুঝিলে ত স্থীগণ, যেমন চোরের মন, 👀

बदल दाथ रूपि कादाशादत।

ইথে ভাবে বুঝা যায়, আছে কোন অভিপ্রায়, চোর মর্ম্ম কে বুঝিতে পারে li

আছে পূর্ব্বাপর চোরে, রাথে সবে বন্দী করে, এচোরে উচিত সেই দণ্ড

কিন্তু ক্রি মাজে মম, যে ধন আছে উত্তম, পাছে হন হরিতে প্রচণ্ড॥

र्तित्व পरतत थन कानित्व छारतत मन,

কি নিম্বাদে বাথি ধনাগারে। নারীর সর্বাস্থ ধন হৃদে তঃ আছে স্থাপন,

নারার শব্বস্থ বন, স্থানে ও: আছে স্থানন যদি চোর চুরি করে তারে॥

অতএব চোরে সখি, নয়নে নয়নে রাখি, কণ মাত্র না হবে বিচ্ছেদ।

তবে হবে ধনাদায়, यूक्टिव नकल माग्न,

भिलानत इहरत প্রভেদ।

এই ৰূপ বাঙ্গ বাণী, শুনি তবে গুণুমণি, রুদিক রুমণী প্রতি কয়।

এনেছি সুখের তরে, নয়ন প্রহরী করে, মনোচোর দণ্ড যোগা নয়।।

না হয় হে ভুজ পালে, বাঁধি রাথ নিজবাসে, সেও ভাল দও যে আমার। রসনা যে রস চার বাঁধ তারে রসনায়,

এই দণ্ড উচিত তোমার।

এৰপ কৌতুক দেখে, স্থীগণ মনোস্থাথে,
প্রশংসিয়ে নাগরে তথন।

অক্লেক রজনী গত, ভাবে ভাব মনোগত,
ক্রমে সবে করিল গমন।।

বিরল পেরে দুজনে, উভয়ে সন্ডোব মনে,
স্থকার্যা সাধিতে হল মন।

জিল নিজ ভাবে কয়, বিফলে বামিনী যায়,
বাঞ্জা পূর্ণ কয় এই ফাণ।।

নায়ক নায়িকার বিহার।
তদন্তরে ছইজনে পালঙ্গে বসিয়ে।
খায় মিঠা পান গলো আমোদিতে হিয়ে।।
খিলি পূর্ণ করি কত রাখে সহচরী।
রাখিল চন্দন চুয়া কেশর কন্তরী।।
ক্ষীর চিনি মিছরি সন্দেশ নানা মত।
সীতল গল্পার জল কপুরি বাসিত।।
নানাজাতি পূপা মালা রাখে শালাইয়ে।
সে সৌরবে মধুকর আইল মান্ডিয়ে।।

পিক সৰ কুছরৰ করিতে লাগিল। শুনি দৌহাকার মন মোহিত হইল।। ত্তবে স্থীগণে ধনী করিল ইঞ্চিত। আরম্ভ করিল গীত বাদেনে সহিত !৷ মধ্র মৃদঞ্বাজে আর নানা যন্ত। মিলাইয়ে তাল মান আলাপে বসস্থ 🛭 মন্দিরা বাজায় কেহ বাজায় ভগুরা। বীনা বংশী আঢ়ি করি বাজে সপ্তসরা।। সঙ্গীতে পণ্ডিত রায় হারাইয়ে জ্ঞান। मधो मरक मरनावरक आवश्विम गान।। শুনি ধনী মোহিত হইয়ে গায় গান। বীনাস্থরে প্রিস্থরে মিলাইয়ে তান।। क्षाँचाकात **अ**टत स्मृत क्षम्य उपित । ছাড়ি গাত স্মান্তি আরম্ব করিল।। দেখি স্থীগণ যন্ত্ৰ তক্ত্ৰ ফেলাইরে। লাকে স্থানান্তরে সবে গেল পলাইয়ে।। লজ্জা শিরে বজু ভবে হানি ছুইজন। সাধিতে অরের কর্ম সমর্পিল মন। ঘন ঘন অবিলয় নিতয় তুলিছে। খন খন চরণেতে বুকুর বাজিছে।।

আবেশে অবশ অঞ্চ জানি ভুজন্ম। । চন্দ্রাননে চন্দ্রানন কিবা স্তর্খেদিয় ॥ কামের সাগর তবে প্রেমে উথলিল। মন্তন দণ্ডেতে রায় মধিতে লাগিল।। নজা পেয়ে লজা তবে কোথা গালাইল। ভয় ভেক্তে ভয় তবে অভয় পাইল। চন্দাননে হেরি স্থা আনন্দ অপার। মনের আবেশে পান করিছে কুমার। নাগর সাগর মত্থে করি ত্রধাজ্ঞান। यमनि जुनिएस धनी मुद्ध मिल शान।। ত্রি দেখি নয়নে নয়ন সে সময়। নিবাইল কামানল জলে জলময়।। বিধিমতে কাম ত্রত করি উজ্জাগন। আত্তে দোঁহে নিজা যায় হয়ে অতেতন।। षिक निक ভাবে তবে দোঁহাকারে কয়। প্রথমে এতেক প্রেম বছ ছঃথে হয়।।

কুমারের স্বদেশ গমনোদ্যোগ।
কিছু দিন এই মত, থাকে সদা হুখে রত, '
রসিকেরে লইয়ে কামিনী।

যতেক আছিল থেদ, সে স্ব হুইল ছেদ, নিত্য স্থাপে বঞ্জে য:মিনী ॥ এইকপে দকে।তুকে, মজিরে অলেষ স্কুথে, প্রেমে বদ্ধ হল চুইজন। উভয়ে উভয় প্রাণ, পলকে প্রলয় করেন, এক ভিল বিনা দরশন !! क्षिंद्र हो हो हाहि दय, कर माल हाड़ा मत्र, নাহি চায় মুদিতে নয়ন! निज्ञान भानारकाभारत, अमा लिंग्स विकास স্তান্ত্রে বহে স্থীগণ।। **এ अकारत तमगय, विकास शक्षतानय,** ব্যগ্ৰ চিত্ত হইল অধিক। মনে ভাবে দেশ ছাড়া, আরু ভ্রাতাগণে হারা, স্থু ভোগে আছি মোরে ধিক।। এই সব চিস্তাযুত, হইয়ে নরেক্রস্কত, মনে মনে করে বিবেচনা। कोगत्न मवादत विल, यादेव क्रांट्र हिन, निक्ष कति मटनत कामना।! - ভবে উঠি প্রভাষেতে, গিয়ে নূপ সমীপেতে,

निवनद्य कत ब्लाट्ड क्य ।

মনেতে করেছি আশ, যাইব আপন বাস, अनुबाह यपि आखा इस ॥ গুকে মম পিতা মাতা, আছে সবে চিম্বান্থিতা, ছলে মাত্র এমেছি বিদেশ। नाहि तिथि तम भवाश, नर्वमा ठक्षण काग्न, স্থির নয় কি কব বিশেষ॥ আর এক শভিপ্রায়, দঙ্গে তব চুহিতায়, লয়ে যাৰ আপন ভৰমে! শুনি জামাতার বীনী, সচিন্তিত নপমণি, কহিছেন সজল নঃনে ! मत्व भाज এक करना, मामत नाहिक अरना পুত্রাধিক পেয়েছি ভোমারে। ভোমা দোঁহা ত্যাগ করি, হহিব এপ্রাণ ধরি. **क्यान दल ना अ भरभादत ॥** এইৰপে নর রায়, কহি বহু জামাভায়, পরে হল পাঠাতে সম্মতি। ডাকি যত আত্ম জনে, আর সেনাধ্যক্ষগণে, স্বিশেষ কহেন ভূপতি। कना आत कामाजाय, याद त्माँ हर निकानाः,

আয়োজন কর সে ভাবত।

যে আজ্ঞা বলৈয়ে সায়, দিয়ে দৃতগণ ধায়, চতুৰ্দিগে ধায় শত শত ॥

আনিল জাহাল কত, বজ্বা পিনিশ শড়ে

**ख**लुक जाउँता अध्यतः।

হয়ে অতি ত্বরায়িত, আনিলেক মনোনীত, গতি বেগে যেমন প্রনা

নানা বিধ খাদা চয়, চুর্বা চোষা **লেহ্য পের,** করিলেফ পরিপূর্ণ ভরী।

র্ডাডি মাজী করি সাজ মস্তকে পরিয়ে ভাজ পতকো তুলিল যাত্রা করি।।

ক্রানাত। যৌতুক আদি, দিল নানা রত্নে নিধি, বজ দ্বা ভূবন রঞ্জন।

ভূবণ মাণিক হার, জি কর বিস্তার ভার,

প্ৰবালাদি বজত কাঞ্চন ॥

দাস দাসী কত জন, সক্ষেতে দিল রাজন, তবে যাত্রা করে শুভক্ষণে।

পরে গিয়ে সুধামুখা, ছল ছল করি আঁপি.
প্রথমিল জননী চরণে ।

বলে মা কর বিদায়, যাইব গুশুরালয়,

কোনে পাঠাব আমি, দরিছের ধন ভূমি,
প্রাণ ধন নয়ন অঞ্চন ॥
ভিজ গিষে কহে বাণী, শুন ওগো রাজ বর্ণে।
কেন থেদ কর অকারণ।
দেখ ভূমি সর্ব্বে জল, কোথার ডানেছ দল,
পিতালয়ে কনার পোলন ॥

### নায়ক নায়িকার বিদায় ও উদয় নগরে উপস্থিত।

এই রূপ থেদ রানী করিল বিস্তর!
তনয়ারে স্থাক্তিত করে তদন্তর।
হরিদ্রা নাখারে অক্সে দিল অভরণ।
আল্তা চরণে দিল দেখিতে শোভন।
খাদ্য দ্রব্য নানা বিপ করায়ে ভোজন।
কন্যারে পাঠান রাণী চুয়িয়ে বদন।
ভবে পিতা মাভা পদে প্রণমিয়ে পনী।
স্থামির সহিত চলে যথায় তরণা।
শুভক্তণে মৃই জনে আরোহিতে ভরি।
অমনি দামামা ডক্কা উঠিল লহুরী।

माम नामी रेममाश्य करत महारताल। শব্দেতে না পায় কেহ শুনিবারে বোল। গুলিল জাহাজ তবে ছাড়ি সেই দেশ। কত শত নগর ছাড়িল অবশেষ ! এমতে যাইতে পথে কিছু দিন পরে। উপনীত হল शिद्य छेमग्र नशद्व ॥ বেলা অবসানে তবে অশ্ব আরোহণে ! গুসজ্জিত হয়ে রায় গেলেন ভ্রমণে 🖟 ভার পরে সে নগরে স্থানে স্থানে কিরি। দেখিল অপূর্ব্ব এক সুনির্মিত পুরি ॥ প্রস্থরেতে সব গৃহ দ্বার সুনিম্মিতি। পুস্পোদ্যান স্থানে স্থানে আছমে রচিত !! धेइबाप (भाष) प्रिंथ नदस्य नक्त न। আপন জাহাজে পরে করিল গমন।। পথে যেতে স্বচক্ষে করিল দুরশন। রাজ পথে চলে যায় কারাবাদীগণ্য 🕒 তার মধ্যে দেখে তার ছয় সহোদর। বুঝিতে না পারে মন্ম ভাবিত অন্তর।। কি মতে এমত কর্ম হবে তা স্বার। মনে ভাবে জ্রমে বুঝি দেখি এপ্রকার ॥

এইৰপ বিবেচিয়ে নিকটে আইল। मिथि मेदाकांत मना श्रम উপজিল।। পরস্পর সবে সবে করি নিরীক্ষণ। অন্তির হইয়ে সবে করয়ে রোদন। বহু দিন পরে সেই বিচ্ছেদ অনল! মিলনে হইল আরো দ্বিগুণ এবল 🛚 এ প্রকারে সবে মেলি ধৈন্য নাহি ধরে। শোকেতে নিময় হয়ে হাহাকার করে ॥ পরে যে রক্ষকগণে বজু রত্ন দিয়ে। অপেন জাহাজে গেল স্বারে লইরে ॥ চিরদিন বিচ্ছেদেতে যে সব অনল। শোকানলে আঁথি জলে নিভায় সকল । **उम्हात कुमात नवाय स्थाहेल।** বল শুনি এছুর্ঘ ট কেমনে ঘটিল।। সুমিষ্ট বাক্যেতে তবে ছয় সহদরে। অনুদ্র অন্ত সমাচার কহে কুমারেরে।। (य कर्प वाक्रमी भरक अत्राप प्रभिन । একে একে সে সকল বৃ**ছান্ত ক**হিল।। যেহেতুতে কারাবাস হয়েছে সবার। **একে একে সমুদর কছে সমাচার।।** 

व्याक्या भागिक श्री भवाद वहन । পরে আপনার মত ক্রে বিবরণ ঃ তার পরে স্বাকারে মলেভে ক্মার। খাদ্য জবা নানা বিধ কঠান আভাৱ :: এই সব মহানন্দ সবে মেলি করে: ইতি মধ্যে কার(ধ্যক্ষ আইল সন্তুরে ॥ বলে মহাশয় আমা সংব্রেপা করি। ८मर इयु कातालानी हरेन नहारी ५ শ্বনি কথা দুপদৃত তা সবালে কয় ৷ অন্য নিশি রাখি যাত হইয়ে সদর 🛚 এক বলি পুনরায় বছ ধন বিল। সম্বর্ষ হইয়ে সংব বিদায় হইল !! ভবে সবে এক ভাবে একত্র হইয়ে! স্থাবেতে বঞ্চায় নিশি কৌতুক করিরে॥ নিশি শেষ করি পরে ভাই সাত জন। প্রভাতে উঠিল স্মরি শ্রীতুর্গা চরণ ।। নিত্য যত কর্ম তবে করি সমাধান। কুমার বসিয়ে ভাবে নবার বিধান। কি প্রকারে এসবারে করিব উদ্ধার। ভাবিয়ে চিস্তিয়ে কিছু নাপাই ইহার ॥

ইতোমধে কারাধাক আসি সেই স্থলে যে জ করে ক্মারেলে সকরুণে বলে।। দেহ ছয় কারাবার্গা দুয়া ঝরি **সবে**। লচেত শুনিলে ভূপ মেরে প্রাণ পরে ৷ গুনি বাণী অমনি প্রাথমি ছয়জনে। মিনতি পুরাক সার কলে সক্রণে ।। যাহ অদা মম সাধা কি বা আছে আর অ।জি ফলি মধো আমি করিব উদ্ধরে। এত বলি করে,বাক্সগণেরে ভাকিলে : হারত ধরি সবাকারে দিল সমপিয়ে ।। সকলে কৰিল পারে নরেশ নক্তন! র-সিবে এসবাফারে করিছে যতন।। নিত্য আনি দেখা করাইবে একবার। বহ ধনে ভোমারে করিব পুরস্কার।। একথা শুনিয়ে সবে যে আজ্ঞা বলিয়ে । यद्य इस महामृद्ध हलिल लहेर्स ॥ ভদন্তরে কুমার ভাবিত মনে মনে। ফি প্রকারে এসবারে উন্ধারি কেমনে॥ কিস বলে কেন ভাব রাজার নন্দন। মত্ৰ বলে আছে তব অসাধ্য সাধন।।

### কুমারের মন্ত্র বলে উদয় রাজ কন্য ভবনে প্রবেশ !

শুনি রুম্রাজা করি নিজ যাজ, চলে অভি জ্ঞা কৰি। দ্রমি মানা স্থান, করিল প্রান সাক্ষার রেজের গুরি 🗓 মু ভিৰু ব্ৰেপ্ড, লা চেনে অনেট্ড, स्तिर्गाउँ भन्न हर्स । ভূপের ভবন, ক্রিয়ু গোভা, राम् परा अमहिमस्य । গর পর গিয়ে, নগনে দেখিয়ে, রা ার অন্তর বত। যেতে এপ্রকারে, কন্যার আগারে, শেষে হল উপনীত !! काम कारी शहर, मां ८६ हत महत्म, গোপ্রে খাকেন রায়। नृत्थत नामनी, मक्ष स्वाभिनी, হেরিয়া পুলকে কার।।

তা সবার ৰূপা, নাহিক স্থৰূপা, অনুপ্র জিজগতে। একেতো ৰূপনী, ভাহাতে ষোড্দী, ব্যাহ্য পালক্ষেতে।। ছেখিলে কামিনী, জগত মোহিনী, গেছিও হটল মন। बाल कि अक्षात किन धनवादि. ক্তি জগে হবে মিলন।। এত ভাগি রায়, চাতকের প্রায়, দেখা দিল সবাবদারে। কাণকাল পালে, চলিল সভাৱে, আগের ক কোল গরে । ছেতা কথ হেতি, সেম্প্র**স্ক**রী, অব্ধ হইয়ে অভে । ধরতেলে পড়ি, বায় গড়াগড়ি, भारीय माल जनका। দেখি যত দাসী, দ্ৰুতগতি আসি, ধৰাধৰি কৰি তোলে ! कि इल कि इल, वल मशीमल, সকলে কবিল কোলে॥

#### व्यानकः-।वद्यानः

वाकाव कुमावी, मिनल सम्बती, কহে সবে মৃতুস্থরে। বিছাত আকার, আমা ধ্বাকার, শারীর ভেদিল **স্বরে** ! যৌবন সাগর, অপার ছন্তার, আম্বা ত্রণী ক্ষীণ। वाहित क्यारन, वित्र आधारन. इहास नाविक हीन। स्त्रि मशीवन, करत निर्वनन, ধৈৰ্ঘা হও ৱাজবালা। ধৈর্গ্য হলে পরে, মিলিবেক ভারে, অবশা ঘুচিবে জ্বালা!! এই कथा न्ध्रित सद्द्रम निक्ती মনে মনে বসি ভাবে ! विक वाल जात. (कन जात मार्व. আজি কালি মধ্যে পাবে।।

## কুমারের অদর্শনে কুমারীগণের খেদ।

এমতে সকলে বিমনা হয়ে। পাইব কেমনে ভাবে বসিয়ে।। রাজাব তুহিতা মোরা সকলে। তবে কেন হেন ঘটে কপালে !! যাহার শা**ননে নমনে** ভরে। ভাহার ভবনে কি আসিবে নরে। যে হক সে হবে আ মরি মরি। প্রাণেতে বঁ।চিমে পুন না হেরি॥ কি করি কি করি বহিবে মান। একে নারী নারি রাখিতে প্রাণ।। স্ত্রীর পতি বিনা গতি কি আন। বাঁচাও না বাঁচা এক সমান।। কামিনীর তারা অাঁখি পতি। তারা হিন জন নাহিক গতি॥ সহেনা থাতনা আ মার মার। গরল খাইব মনেতে করি ॥

এখনি আমরা প্রাণ তেজিব। অনলের মুখে আজি পড়িব। এৰপে করিতে আক্রেপ ধুনি। বুঝাইল ভারে যত রমণি।। এমত দেখিয়ে সে সহী দলে। স্নান: হার সবে করার বলে : এখানে র্সিক গিয়ে ত্র্রিভে। র্মিক গণেরে লাগে ভানিতে 🖰 ক্ষণ কলে পরে রাজ কুমার। **স।নাদি ক**রিয়ে করে আহার । এমত কালে ছয় ভাতাসনে। আইল তথায় রক্ষকগণে॥ দেখিয়ে কুমার হয়িত হয়ে! नान ज्वा भव जुक्षाः। नत्यः।। পরেতে সকলে বিদায় হয়ে। কারাধ্যক সনে গেল চলিয়ে॥ দেখিয়ে এমত দৃষ্ট ঘটনা দ্বিকের মনেতে হল ভাবনা।।

## সর্ব কনিষ্ঠা কুমারীর সহিত কুমারের সাক্ষাৎ।

নানা মতে ভাবি তবে নবেশ নক্ষন ! বেলা অবসানে চলে করিতে ভ্রমণ।। बाक भएं हिंत यात इत्य सम्बद्धि है। আশ্বর্মা শুনহ তাহে দৈবের ঘটিত 🛚 नद्रम निम्नी भर्षा क्रिकी त्य करा সবে হতে শ্ৰেষ্ঠ ৰূপে স্নদুশ্য গঠন ! যে অবধি কুমারে সে দেখিছে নয়নে দিবা নিশি ভাবে যাস আপনার মনে।। বার ঝর ধারা বহে নয়নেতে ভার। বিরহ্ জ্বালাতে সদা দেখেছে আঁধার । সুখ সজ্জ। আর কিছু মনে নাহি লয়। এলাইত কেশে পড়ি ধরা তলে রয়।। य जन कथन कान जातन ना रामना তারে সহ্য কোথা হয় বিরহ্ যাতনা 🛚। তাহাতে বসম্ভ কাল কুটিল কোকিল। ভসিল মসিল দায় দত্তে লাগে খিল !!

এৰপ অধৈষ্য হয়ে বেলা অবসানে।
গবাকের ভাবে বসি চায় পথ পানে।।
হেন কালে সেই পথে রিকি বতন।
অখাৰতে চলি যায় কৈল নিরীক্ষণ।।
বে ৰূপ অন্তরে ভাবে মন্মথমোহিনী।
শে ৰূপ অন্তরে দেখি আহ্লাদিত ধনী।।
কুমার তাহারে পরে করি নিরীক্ষণ।
হৈল ভাবার ৰূপ তরক্ষে মগন।।
মিলন সলিল আশা মন মধ্যে করি।
উভয়ে রহিল উভয়ের পানে হেরি।
দিল পুলকিত হয়ে কহিছে দেঁশ্হায়।
পুরাও যার যা বাঞ্জা এইত সময়॥

## কুমারকে রাজ কুমারীর নিজ ভবনে আনয়নের পরামর্শ।

দেখি দোঁহে ছই জন, মন হল উচাটন,
কামিনী অধিক ব্যস্ত তায়!
.গিয়ে নিজ সখী পাশে, অতি মৃছু মৃছু ভাষে,
বিবরণ কহে সমুদায়॥

ঐ দেখ সহচরি, মম মন চুরি করি, यात । अहे शुक्रम तटन। মখী শীন্ত্ৰ গতি যাও, সক্ষোপনে বাৰ্ত্তা লও, কিবা নাম কোথা নিকেতন।। আছে কোথা বাসা কৰি, আপন চক্ষেতে হেরি. এসে বল মম সলিধানে। र्श्वन मधी अवहम, कविल भीख शमम, मुरुषत नक्त (यह शामा। করি কত সবিনয়, কহে কই মহাশয়, কিবা নাম কোথায় নিবাস। আছ কোথা করি বাসা, কহ মরে সত্য ভাষা, অভিলাষ করিয়ে প্রকাশ।। আশয় বুঝিয়ে তার, তদন্তরে সে কুমার, कहिट्डिफ मशीत मन्न। যে ভাবে এসেছ তুমি, সে ভাবনা ভাবি আমি, পরিচয় করহ তাবণ।। বঙ্গাধিক্য মম ধাম, সুরসেন ধরি নাম, অবিজ্ঞান ভান নানা দেশ। অর্নেক নগর ফিরি, বাহন করিয়ে তরি, এনগরে আসি অবশেষ।।

করেছি নৌকায় বাসা, শুনি এ আশ্চর্য্য ভাষান আমি মাত্র জানিতে কারণ। কি কব করি প্রকাশ, মনে যাহা অভিলায,

রেখেছি ভা করিয়ে ধারণ।।

अनि मानी शून कड़, छन ७न इनमझ,

কিবা ভয় করিছ আপনি।

তব ষংহা অভিপ্ৰায়, বুকেছি তা সম্দায়, আমি মিলাইৰ গুণমণি॥

এৰপ কুমারে বলি, ক্রত গতি যায় চলি, যথায় আছেন রাজস্তা।

ষতেত কর্ণে শুনিল, সর গিয়ে নিবেদিল, হইরে পরম হয় যুতা।।

क्ष निरंत अत्रव वाधी, शून चादत करह धनी,

ষাহ সধী আন গিয়ে তারে।

कत्रि डाँदित म्ब्रमन, कव त्रव विवद्गण,

व कर्ष भारतम भा मतादा।।

শুনি স্থী কর যোড়ে, কহে ধনী বরাবরে, একি কথা কহ ঠাকুরাণি।

যে পুরে শমন ডরে, ফেমনে আসিবে নরে, ভয় হয় শুনি তব বাদী ॥ পরে শুনি ধনি কয়, কেন তব এত ভয়,
অসীম নাগীমা হয় যাঁর।
ভিন্ন কনে, অসাধা কি ত্রিভুবনে,
তিনি ভাবিবেন পথ তার।

# কুমারের কুমারী সদনে উপনীত।

এতেক শুনিয়ে সখী যায় চলি দ্রুত।
যথায় নরেন্দু স্থুত তথা উপনিত।।
কুমারীর রিবরণ কহিল সকল।
যেতে হবে রদরাজ শীঘ্র চল চল।।
শুনি বাণী অমনি সখীরে কহে রার।
যাহ অগ্রে কহ তারে যাইব তথায়।।
এত বলি দূতীরে বিদায় করি দিল।
মন্ত্র পড়ি পাছে পাছে কুমার চলিল।।
এখানে স্থুন্দরী আশা পথ চেয়ে ছিল।
হেন কালে পূর্ব্বমত কুমারে দেখিল।।
তবে স্থুব্দনি ধনী তথনি উঠিয়ে।
বদাইল সমাদরে নাগরে লইয়ে।।

নাগরের মনঃ প্রাণ করিতে হরণ। ञ्चायुरी ञुभागम कविष्ट वहन।। ভাজি লাজ রস্নাস কহি হে তোমারে। দেখা দিয়ে কটাক্ষেতে ব্ৰহ্ আমারে। যে দিনে আমরা সবে দেখেছি ভোমার। বিশেষ ব্যানিত তায় হয়েছে হৃদয়।। নতুব। কখন কেশা রমণী হইয়ে। অত্যে কথা কছে কোথা পুরুষে ডাকিয়ে॥ তবে আর আধিনীরে কেন হে নিদয়। আছে। কর পরে মালঃ দিব মহাশয়॥ তদন্তরে কুমার ভাবিরে মনে মনে : বুবিল বিবাহ নহে উচিত একণে।। चुकारम कहित कांचा राज्य श्रव भारत। অপ্যশ ঘটিবে কলঙ্ক দেশে দেশে ॥ বিশেষত কারা বন্ধ আছে ভ্রাতাগণ। তা সবারে কোন ছলে করিব মোচন।। এক্ষণে উচিত এই সম্মতি লইয়ে। বিবাহ করিব পরে প্রতিজ্ঞা পুরিয়ে॥ তাহাতে হইবে মোর সর্বত্তেতে যশ। সর্ব্ব কার্য। সিদ্ধ হবে এ মোর মানস।।

এত ভাবি কামিনীরে কহে রসময়! ए कहिरल एक कर्य कड़ जान नग्न॥ শেহেতু ভূপের পণ অগ্রাহা করিয়ে। বরিবে আখারে ভূমি কামে মন্ত হয়ে।। যেহেতু উদ্দেশ বলি দাও হে আমারে। যাহাতে চিনিতে পারি তে মা স্বাকারে !৷ শুনিয়ে আফলাদে মগ্ন হইয়ে অশেষ। বিবাহ প্রতিজ্ঞা পূর্ণ করে উপদেশ।। শুন হে বুসিক বাজ মো সবার পণ। একারতি আছি মোরা ভগ্নী সপ্তজন ৷ যে দিনে চিনিতে ভূমি যাবে রাজ বাসে। শ্রেণীবদ্ধ সবে রব সবাকার পালে।। मम शादन मम (कार्ष खन खरह ताता। এ প্রকারে রব তাহে নাহিক সংশয়।। বিশ্বতি না হয়ে থেক নিমুভাগে হেরি। মৃত্তিক। খুঁড়িৰ পদ অঙ্গুলিতে করি।। ইহাতে বুঝিবে সধা যে যেখানে রবে। ষিজ বলে আর তব বলিতে না হবে।।

## কুমারকে কু মারী পরামর্শ দেন।

উপদেশ পেয়ে রায় চাহিল বিদায়। क्या श्विन जादव धनी विष्कृतनत भाग । কহিছে কুকুণা করি হয়ে সকাতর ! অধিক কি কৰ ভাৱে শুন হে নাগর।। প্রাণ পণ করি তবে গেরেছি তোমায়। কি ৰূপে তে কোন প্রাণে করিব বিদার।। আর কিছু ক্ষণ থাক করি নিরীক্ষণ। ষ্টাথি স্থির হলে প্রাণ করিবে গমন।। আমি কি বলিব তবে যে হয় উচিত। বুৰো স্ববে কর যাহা হয় স্থবিহিত ॥ কি দিব বিদায় আর করি অনুমান। সবে ধন ছিল প্রাণ করিয়াছি দান।। প্ৰাণ ৰূপ পক্ষী তব সঙ্গেতে চলিল। এদেহ পিঞ্চর মাত্র পড়িয়ে রহিল।। এমত করুণা বাক্যে নাগরে ভুষিয়ে। বিদায় করিল শেষ কাতর হইয়ে॥

ত্বরিত গমনে তবে রসিক রতন। অপেন জাহাজে পরে করিল গমন ॥ পর দিন প্রভাতে করিয়ে নিজবেশ। ভূপের ভবনে গিয়ে উত্তরিল শেষ 🖰 कानि नीउ डेशनीउ यथा घली हिल। কুমার ধরিয়ে ভাচে ঘন বাজাইল।। त्वहें धनी नृशमि छनिता खबता। माम এक भाष्ठीतनम कुमात अन्दम ॥ যোড় করে কুমারের করি সমাদর। বলে চল মহাশর ভূপের গোচর।। শ্রুত মাত্র নৃপস্কত ভাবি রাজনীত। ভাবে ভূত্য বাক্যে মম যাও অনুচিত।। তদন্তর কুমার এগৰ বিবেচিয়ে। পাস্কচারি করি ফেরে বাক্য না কছিয়ে 🛭 ना वृत्तिया भन्म किছू मात्र अर्थे जन। যাইয়ে ভূপের পালে কছে বিবরণ ধ বুজিমন্ত নরকান্ত বুঝিয়ে ভাহায়। প্রেরণ করিল এক মন্ত্রীরে তথায়॥ ভারবান মৃদ্রিবর বিচক্ষণ অভি ৷ নৃপস্থত ৰূপ দেখি হল ক্ট মতি॥

পরে বছ সমাদরে তুবি মিন্ট ভাবে। কুফারে লইয়ে গেল ভুপতির পাশে!! নরেশ দেখিয়ে রূপ প্রশংসি বিস্তর। म श्रीयन कति वह कटत मगानते।। পরে পরিচয় পেয়ে আক্সাদিত মতে। যত্ন করি বসাইল রত্ন সিংক।সনে। আনে নানা খাদা দ্রা করি আছরণ। কভ কব নাম ভার কে করে বর্ণন । কত মত এপকার করি আয়োজন। নতেশ কুমার তবে তবেন ভোজন । **उम्ख्त कुम**'टङ कहिए नद ताह । অপিনার মন গত যত অভিপ্রায় ! একারতি কন্যা নম আছে সপ্ত জন। ষে চিনিবে তাহারে করিব সমর্পণ।। না পারিলে কারাগারে রাখিব তাহারে। ध्यतूमि इस यमि जानि मदाकादत । এমত শুনিয়ে বাক্য হয়ে হুট মতি। নরেশ কুমার তাহে হইল সম্মতি 🛭 তদন্তর পুলকিত হয়ে নৃপমণি। मशीशर्ग आख्वा नित आनिए निन्नी।

खनि मात्रीशय मत गहात्र। वनत्त । विविध श्रकारत माजाहेन कमानात । পরাইল অকে নানা বসন ভূষণ। বিনাইয়ে দিল বেণী অতি স্কৃতিকন।। वनम भनम भीन धना धवा छाल । करेकि दुर्छट यूपिका यन हेटन একে দে कश्मी टाइड् माना माज कति। চিক মধ্যে চলি যায় গমনেতে করী 🛊 ভনেত কুমার উঠি সবারে ছেরিল। क्षे एक नवात मन भाहि कतिन । আছিল পূৰ্বেতে ৰূপ অন্তৱে প্ৰবুস। पिथित्व कुमारत नव इड्ल भी उन ॥ তবে দৰে মনে ভাবে পাইব কেননে। তত্তিক কুমার ভাবিছে মনে মনে 🛭 কামিনির উপদেশ অন্তরে ভাবিয়া। স্বাকার পানে তবে রহিল চাহিয়া 🛚 पिथिन मतात वादम किन्छ। सुन्दती। रुं छिका थनन करत भनाश्रुलि कति । তাহাতে বুঝিল রায় দে বেখানে ছিল। 🦠 धदक धदक मदव हिनि जुदश यानाईन।

দেপি নরপতি অতি হইয়া উলাস: আনন্দে নিমগ্ন হয়ে লাহি স্বারে ভাষ । ভূপ বলে পূর্বে ভাগ্য আখার আছিল। तिहे (र्जु मय कीर्डि मानन शूर्ति ॥ এডবলি আলিজন করি কুমারেবে। বসাইল যত্ন করি নিংহাসন পরে॥ তদশুরে র'জপুত্রে কহিল রাজন। বিভা কর যুবরাজ দিন শুভক্ষ ।। শুনি বাণি অমনি যুড়িয়া কর দয়। মনে যাহা ছিল ভাহা কছে সমুদয় 🛚 তব কৰা। বিভা জন্যা ৰন্দি যত জন। অভিপ্রায় দে ববায় করিব মোচন।। শুনি কথা মহিপতি পাইল স্বীকাব। ৰিজ বলে ও মতে অমত আছে কার।

ছয় সহদরের কারাগার মুক্ত।
পরে শুন অপরূপ, কারাধ্যক ডাকি ভূপ,
কহিলেন সব বিবরণ।
কুমারের আজা মত, আন বন্দিগণ যত,
বধা যোগ্য দেও সবে ধন।

स्वित वाधि ভृতাগণে, আনি वन्ति ये कान, कू मात ममीत्म ममलिल। ঁন্প**স্থ**ত তদন্তর, দিয়া র**ত্ন বছ** তর, স্বাকারে বিদায় করিল। পরে ভ্রাডা ছয় জনে, ভক্তিভাবে স্থট মনে, वमारेल कति ममानत् । बाजूगर्य (कार्ष जाद, मिक इंदेरक (बार्ष करव, শিষ্ট ভাবে ভূষিল বিস্তর 1 সমদন্ত দেখি ভাবে, কুমার যে ভ্রাতৃ সবে, কি ভাবে এভাব ভাবি ভাই। বুঝে রাজা অনুভাবে, কু মারে জিজ্ঞাদে ভবে. এ ছয় জন কে তব স্বধাই। শুনি বাণি ভূপ কয়, যেড়ে করি করদয়, সবাকার যতেক রুতান্ত! যে জন্য ছাড়া ভবন, যেহেতু হইবে পণ, পূনর্কার মিলন একান্ত।। এই মত বাক্য শুনি, আনন্দেতে নৃপমণি স্বারে করিল আলিঞ্সন। বহুমত সমাদরে, বসায়ে পালক্ষ পরে,

একে একে করে সম্ভাষণ।।

পরে ভূপ মৃদ্র ভাষে, কহিছে সবার পাশে, দেহ লোমাঞ্চিত ভারভারে। मिनाछि शत्रुषा य 5. तम नव इत्य विकाउ. মোৰে নিজ ৯ণে কথা কৰ !! শুনি ছয় গুণকেনে, কহিতেছে চচ্চস্করে, কি হেও ভাৰত এ প্ৰকার। কর্মা স্থতা আছে বাহা, কে খাণ্ডিতে পারে তাহা, ইথে দোষ কি তাতে তেমার॥ এই দ্রূপ ব্যক্তা ছলে, মাস্কায় করি দকলে, মূপতি কুমার অণি কয়। ছিল বাঞ্চ যে যাহায়, পূৰ্ণ তা হল সৰার, এফাণে করম পরিণয় ! শুনিয়ে এনৰ বানী, মৃড়িয়ে যুগল পাণি, गरीभारत करिए गउत्म। জ্যেষ্ঠ বিদ্যান ন যথা, কেমনে ক্ৰিষ্ঠ তথা, जिथिकाती वित्रम वनत्म।। অতএব শুন রায়, তব সপ্ত চুহিতায়, ছয় ভ্রাতা করিব বিবাহ। ইথে তব অভিপ্রার, উচিত যে মত হয়,

সেই মতে করহ নির্বাহ॥ এই মত বাক্ত শুলি ক্রিকেন্ট ন্ত্রন্তি হোমা সবা অধিকার, আমার এ আধকার, অধিকার কি বলিব অ'মি॥

তুমি তব ছয় ভ্রাতা, নাহি মম বিভিন্নতা,

সম ভুলা দেখি সবাকারে।

ডিজ কর অকপটে, এয়ুক্তি সূমুক্তি বটে,

বিভা কর ছয় ছহিতারে॥

ছয় সভে। দরের বিবাহ। মভায় ব্সিয়ে ওবে ডাকি মভাজনে। অ্ভের দিল মহীপাল দ্রব্য অহেরণে॥ আজা মাত্র প্রত করিল সমুদ্র। পুরোহিতে ডাকি করে দিনের নির্ণয়। পারে শুভক্ষণ দিনে করি বর বেশ। রত্ন গ্রহে ছব জনে করয়ে প্রবেশ।। পরে ছয় তুহিতারে সপ্ত সিংহাসনে। বস্ভিয়ে আনিল স্বার বিদ্যমানে।। ৰ্ক্তা আচার ব্যবহার ছিল যে প্রকার। প্রদক্ষিণ করাইল সপ্তে সপ্তর্বার ॥ किनिएं किन्छ। कना (बार्छ (कार्छ। बन । এই মত হত্তে হত্ত করিল বন্ধন।। বাদ্য ভাও মহাকাও আনন্দ অপার ! এই মত হয় কত আশ্চর্য্য ব্যাপার।

#### वानम्-विलामा

নরেশ আনদে মগ্র মনেতে বিচারি। বিধিমতে ছয় জনে সঁপিল কুমারী॥ বিবাচ নির্ধাহ দেখি যত রামাণ্ডে। হলাছলি দেয় সবে আনন্দিত নান 🖠 ক্মা পাত্র লয়ে মনে চলিল বাস্থে: বাজিল বাজনা গায় কিয়র স্তস্তরে! এধ স্বরে বাস ঘরে রামাগণে ক্য। तमिका तमिरक कथा **ए**ड मञ्जूषा ॥ ख्राकत मुद्धं इथे हा मठ हक्ता। কমলের মকরদেদ ভূটি মধুকর 🛚 स्करन स्क्रम उथा इर्ग भिन्न। বাসর তেজিয়ে ভবে যায় রামাগণ ॥ বিরল পাইয়ে তবে যতেক কুমারে। প্রেম রুদে নবরুদে ভোষে স্বাকারে। নানা মতে করে কছ কান্য আলাপন ৷ ভাবে বুঝ এভাবে ভাবক ষেই জন।। সন্তপ্ত আছিল বিরহিণী ধনীগণে। রিগ হল সেই ত্বালা নাগর মিলনে॥ যামিনী প্রভাতে উঠি ছার সহদরে। উপনীত **হল স**বে ভূপ বরা**বরে।** আনলেতে হয়ে মগ্ন সোমদপ্ত রায় ! কৌতুকে জামাতাগণে বসায় সভায়।।

এইৰপে মহানদে নূপ পুত্ৰগণে। মহায়ুখে সুখা সবে শুশুর ভবনে 🛭 ্কিছু দিন পরে সপ্ত নরেশ তন্য। ভুপের সমীপে গিয়ে সবিনয়ে কয়।। ব্রুদিন দেশ ছ'ড়ি মোর' ছয় জন। আসিয়াছি বিদেশেতে কারতে ভ্রমণ গ . গুহে মাতা পিতা বন্ধু আছে বহু জন। ত্যজিয়ে স্বারে করে প্রাণ উচাটন।। অতএব যদি ভূপ হয় অনুমতি। চিন্তা দূর করি গিয়ে আপন বস্তি।। আর এক অভিপ্রায় মো সবার মনে! সঙ্গে করে বারে যাব তব কন্যাগণে।। জামতোগণের বাক্য শুনিয়ে রাজন। কহিতে সাগিল হয়ে সঙ্গল নয়ন !! কন্যা দিয়ে পাইয়াছি সপ্তগুণ নিধি। পুজাধিক বাসি আমি সে দিন অবধি।। পাঠাইয়ে দিব যদি ভোমা সৰাকারে। কেমনে রহিব বল এছার সংসারে।। এৰপে জামাভাগণে কহিয়ে ভূপতি। পরে পাঠাইতে সবে হইল সন্মতি॥ দিয়ে নানা রতন যৌতুক জামাতায়। কন্যাগণে নররায় কৌতুকে পাঠায়॥

मान मानी मटक चात मिल जून करा। মাত্র তুরঙ্গ গাড়ী পাল্কি শত শত।। वात मश्रे काराक मिल्नम मश्रकताः পূর্ণিত করিরে নাণ মুক্তা আদি ধনে।। थाना ज्वा नान! विव जान्ध्या या छिल। ক্রমে ক্রমে জাহাজেতে পূর্ণ করি দিল। তবে कमाधि वामी निकटि यहिता। বিদায় চাহিল পদে প্রথাম করিয়ে 🛚 শুলি অ'ফ্লানেতে রাণী চুল্লিয়ে বদন। খাদা দ্রা নানা বিধ করায় ভোজন । তদন্তব প্রণমিয়ে জনক জননা। স্থামির শহিত চলে লইয়ে দজিনী। मिन शुक्रकारी जात मध भव्मात । আরোহণ কৈল গিয়ে জাহাজ উপরে॥ शुक्रकर्भ चेलि फिल इद्य द्वर्गवान। ইলারর্ত্ত দেশ চলে ছ\ি কত স্থান।। দ্বিজ নিজ ভাবে অগ্রে রূপবতী পাশে। কুমারের সমাচার কহিল বিশেষে।।

#### व्यामक-।दलाग।

### সপ্ত সংহাদরে ইলাবর্ত্ত দেশে আগমন।

হেন শুনি রসবতী, পুলকিত হয়ে মৃতি, অত্রে গিয়ে দারে দাঁড়াইল। হৈত। তটে গুণধাম, তোপ দাগে অবিশ্রাম, ধনী ধুনি শুনিতে পাইল।। তদন্তরে রসময়, ভাতাগণ প্রতি কয়, পূর্ব্য কথা করিয়ে স্মরণ। যে মতে রাফদে ববি. প্রাপ্ত হল রত্র নিধি, বিস্তারিত সে সব কথন।। জতএব মহাশ্র, যদি মোরে আজ্ঞা হয়. অত্যে আমি ঘাই সেই স্থলে। পরেতে রাখিয়ে তরি, কিঞ্চিত্ বিলম্ব করি, এস তথা তে"মরা সকলে। এত বলি রসরাজ, না করিয়ে ক্ষণ বাজি, कामिनीत निकटि ह लगा। **স্থেতা ধনী দাঁড়াইয়ে, আছে আশা পথ চে**য়ে, रश्न कारल नागरत (मिथ्न II আনন্দ সাগরে ভাসে, আসিয়ে নাগর পাশে, কহে কত করি অভিমান।

#### अविका-विनामा

मागरतत करत धरत, अस्मक विमय करत. আনলেতে হয়ে ভাসমান ॥ করি থেদ মৌন মুখে, রসবতী অতি ভূপে অপোনুখে নির্থিয়ে ধরা। कीटन অতি मकारुटत, यमन नश्चन नीट्स, ভাষে ধরধের জিনি ধারা ৷৷ কি কৃহিৰ মন তুথ, পেলে স্বথ দিলে ডুঃখ. দেখে তথ তুল্ব স্থাপের। তুঃখ নিশি অবনান, পাইয়ে জোমারে প্রাণ, সুখা গত গেল তুঃখোদ্র।। শুনি কামিনীর কর, ধরিয়ে ক্তে নাগর, স্থমিউ বাক্যেতে ভাষ মন। র্নিকা কামিনী ভূমি, অর্নিক মত আমি, দিয়েছি হে অনেক যাতন।। অতএব ত্যান্ধি রোষ. ক্ষমহ সকল দোষ, হইয়ে আমারে কুপান্বিতা। শুনিয়ে মধুর বাণী, আনন্দিত হয়ে ধনী, জিজ্ঞাসিল কুশল বারতা।। **७ न छ** दत्र त्रभारत, कट्ट कथा अभूनत्र, যথা যাহা হইল ঘটন। ভার্য্যা ভাতা সঙ্গে করি, বাহন করিয়ে তরি, যে মতে তথায় আগসন !!

এত শুনি রসবতী, আহ্লাদিত হয়ে মতি, প্রশংসিয়ে নাগরেরে কয়।

শুনিলাম কন্মতিব, মনুষ্যের অসম্ভব, সম্ভব তোনাতে সমুদয় h

নভূব ভোষাতে সমুদ্র ।। ক্রিপ ভাগর সভে হিস্টাল্রপে চ

এৰপ নাগর ননে, মিফীলাপ ছুই জনে, করিতেছে হয়ে হর্মিত।

হেন কালে সেই স্থলে, একত্র হয়ে সকলে, রাজপুত্রগণ উপনীত॥

দেখি তবে রসময়, কামিনীরে সমুদয়, শবাকার পরিচয় দিল।

শুনি বাদী ব্যবহার, করে ধনী দে প্রকার। কুমার স্বারে সম্থাবিল।

পরে লইঃর সবাবে, ননো বিধ উপহারে। সকলেরে ক্রাম আহার।

ভোজনায়ে ভবনেতে, লয়ে অতি সাদরেতে,

সভায় বসায় পুনবার॥

পরে ধনী মৃত্ত ভাষে, কহিল কুমার পাশে, আনিতে নতিনী যায়াগণে।

আর যত সমভ্যারে, আন যদি একেবারে, বড় প্রীত পাই তবে মনে॥

শুনিয়ে ধনীর বাণী, সেই ক্ষণে গুণমণি, আনিলেন স্বারে সংহতি! দেখি ধনী বিনা ব্যাকে, জায়া সতীনির মাজে মৃত্র লাজে ধীরে ধীরে গতি।। নকলের ধরি করে, লয়ে যায় নিজপুরে,

শমাদরে ব্যায় আগনে।
 খাদ্য দ্রব্য আয়োজন, করিয়ে ধনী রক্ষন,
 ভোজন করায় সর্বাজনে॥

পরে হয় দিবা গত, নিশা হল সমাগত; জুরিত তরিতে সবে যায়।

স্থরদেন নিশা ভাগে, কামিনীর মনো যোগে, মনোসাধ বাসনা পূরায়।

বছ দিন পর যোগে, সুযোগ স্থােগ জােুগে, যোগে যোগে কভ কথ। হয়।

নেও কত অনুযোগ, হয় যাতে ভঙ্গযোগ, অঙ্গ যোগে দৰ লুঃখ ক্ষয়॥

পরে সুরসেন বলে, রজনী প্রভাত কালে, .
বাঞ্জা তোমা লয়ে যাব দেশ !

এইরপ তুইজনে, কথা রূপবতী সনে, ' দ্বিজ বলে নিশি হল শেষ।।

### সপ্ত সংখ্যেরর স্বদেশ গমন।

প্রভাতে উঠিয়ে एবে নরেশ নন্দন। নীতি মত কৰ্ম যত *কৈল স্*মাপন।।\* जमस्दत (अधुनीदत विनदत रु.इन । মানস যা ছিল তাহা পূৰ্ণিত হইল।। আত্রব শুন প্রিয়ে দিন শুভক্ষণ। মম পক্ষে চল যদি না লয় তব খন।। পতি नानी खरम धमी इरत मका छत्। বলে একি অধিনীরে কহ প্রাণেশ্বর 🛭 যথন এদেহ মম দঁপেছি ভোমাতে। তব স্থাবে স্থী ছঃখ তোমার ছঃখেতে।। তাহাতে অবলা কুলবালা আমি নারী। কেমনে তোমার মত লঙ্গিবারে পারি॥ বুঝিয়ে রসিক রাজ কামিনীর মতি। দ্রুত সবে ডাকি তবে দিল অনুমতি।। যত রত্ন জহরাত আছে এনগরে। উত্তোলন কর সব জাহাজ উপরে॥ আজ্ঞা মাত্র দূতগণ নিযুক্ত হইরে। मान। माटक कामिनीटत पिल नाकाइटरा।। মন আনে রসবতী ধরিল যে বেশ। নে ভাব দেখিয়ে কাম হয প্রাণেশের।

পরে শুভক্ষণে রায় কামিনী সংহতি। আপন জাহাজে গিয়ে উঠে শীঘ্রগতি ॥ एत् **य**ण मात्री **धरम धक्छ इड्ड**ा ধরি করে সমাদরে কাছে বসাইল।। **उ**दि नश्वत्र्षं य.केट करमर्भः। খুলিল জাহাজ সব মনের হরিছে।। পরি তাজ দাঁড়ে বাজ বান্ধি দাঁড়িংত। আলা আলা খোদা ভালা ডাকে সর্বজনে ভোল চাক মহা জাঁক হাঁকে ভুভাগণ : ভোপের উপরে ভোপ দাগে কত জন।। এমতে যাইতে পথে কুমার সহার। অন্তরেতে উথলিল আমন্দ অপার। এই ৰূপ রক্ষ রুসে দেশে আগমন। खंड ममाहादत ट्यांश मार्श वाश्वता দুত গিয়ে ভূপতিরে সমাচার দিল। শুনি ভূপতির স্থর সিদ্ধা উর্থলিল।। ভদশুর পুত্রগণ মঙ্গল কারণ। श्रात श्राप्त देकल नाना प्रक्रलाहत्। পরে সক্রীকেতে সবে গিয়ে নিকেতনে। প্রণাম করিল পিতা মাতার চরণে । পুত্রী হেরি রাণীন্বয় আর মহীপতি চ্যুক্ত প্রের প্রায়ণ সংস্কৃত কর্মাকে হারি -

क्रां क्रांच नवाकारत वनाईरम् कारल। শত শত চুয় দেন বদন কমলে।। পরে আদ্য অন্ত যত জিড্ডাসে নরেশ। শুনিলেন সুবিস্তার সমাচার শেব।। ধন্য পুত্র স্থরদেন তুমিরে আমার। চিরকাল কীন্তি যশ ঘোষিবে তোমার ॥ সপ্তম পুত্রের মধ্যে হইরে কনিষ্ঠ। ণে কর্ম করেছ বাপু জ্যেষ্ঠ হতে শ্রেষ্ঠ॥ ইফ নিগ শিষ্ট ধারা গুণী স্বরাপ্তণে। বলিষ্ঠ রুণেতে বিজ্ঞ বলিষ্ঠের স্থানে॥ তদন্তর সুথে শুকে ক্মার লইরে। ভূপতীর <mark>নমীপেতে দিল স</mark>মর্পিয়ে ॥ পুত্র পরিবার আর স্থথ প্রাপ্ত হয়ে। স্থাপে কাল হরে মূপ কালে ফাঁকি দিয়ে ॥ প্রিছর্গাচরণ হৃদে করিয়ে ধারণ। দিজ রামলাল গ্রন্থ করিল বর্ণন।। অশ্ব পৃষ্টে স্থাকর সমুদ্র দক্ষিণে। শত নিৰূপণ হল বস্থুর মিলনে।। দশম রাশিতে ভোগ করে নিশাপতি। ষষ্ঠ দশ দিবা আর সপ্তমীর তিথি।।